चन्दामामा
सितम्बर १९७२
९०
P

Photo by : SURAJ N. SHARMA

रसीली...प्यारी...मज़ेदार.
सिर्फ़ २५ पैसे
PARLE POPPINS 25 PAISE
नयी पारले
पॉपिन्स
फलों के स्वादवाली गोलियां
अनानास, नींबू, नारंगी, मोसंबी व रास्पबेरी—
पांच फलों के स्वाद्वाली १३ स्वादिष्ट गोलियां—
हरेक शानदार, कम कीमत के पैक में।
पॉपिन्सका स्वाद चखो, पांच फलों का मज़ा लो
everest/122b/PP hin

सफलता के
शिखर
को चूमिये
स्वान पेनसे
स्वान पेन से परीक्षा में सफलता आसान हो जाती है। इससे आप बेहतर और सर-लता से लिखते हैं। स्वान ऑक्सफोर्ड या कैम्ब्रिज पेन से लिखा कर देखिए—ये छात्रों के लिए ही विशेष रूप से बनाये गये हैं।
बढ़िया लिखाई के लिए
स्वान
डिलक्स स्याही
इस्तेमाल कीजिए
स्वान (इण्डिया) प्राइवेट लिमिटेड
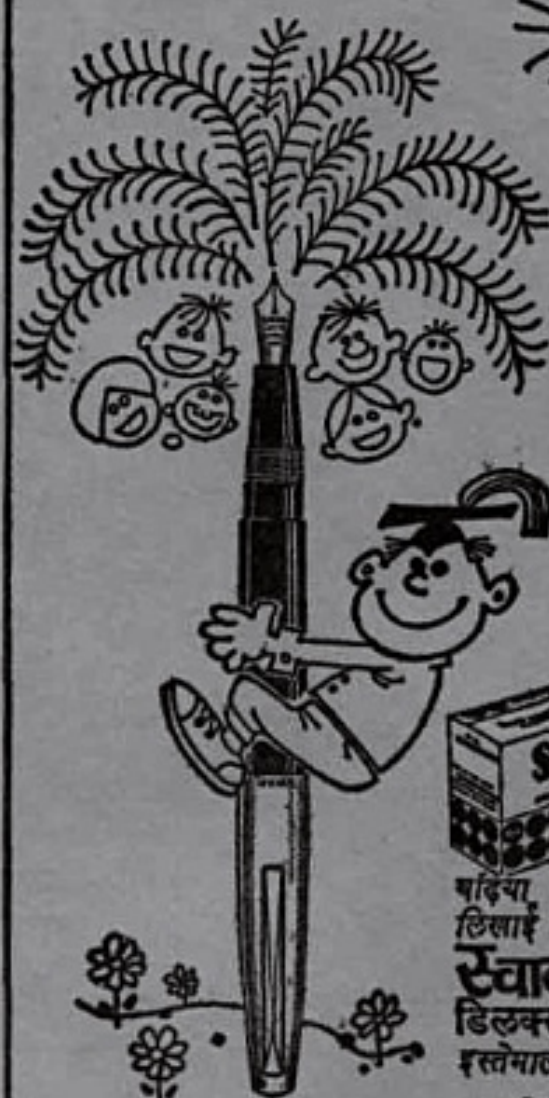
PRIME MINISTER

MESSAGE

Our children need books and journals which will awaken their minds to the marvels of creation and the living universe of ideas. Publications for children must arouse imagination, create aesthetic awareness, encourage the desire for knowledge and at the same time teach them to live in harmony with their own society and the world.

My good wishes for the continued success of "Chandamama".

New Delhi,
July 15, 1972.

(Indira Gandhi)

चन्दामामा

संस्थापक: नागिरेड्डी
संचालक: 'चक्रपाणी'

हम इस अंक के साथ "एक दिन का सुलतान" नामक एक लंबी कथा दे रहे हैं। यह कथा अत्यंत रोचक और ज्ञानवर्द्धक भी है।

"शंकालू आदमी" नामक कहानी के द्वारा हमें यह विदित होता है, जो व्यक्ति अपने कर्मचारियों के मन को समझ नहीं पाता वह अच्छे और बुरे सभी लोगों के प्रति शंका करता है और सबका विश्वास खो बैठता है। फलतः इसका परिणाम उसके लिए हानिकारक होता है।

वर्ष : २५ सितंबर १९७२ अंक : ३
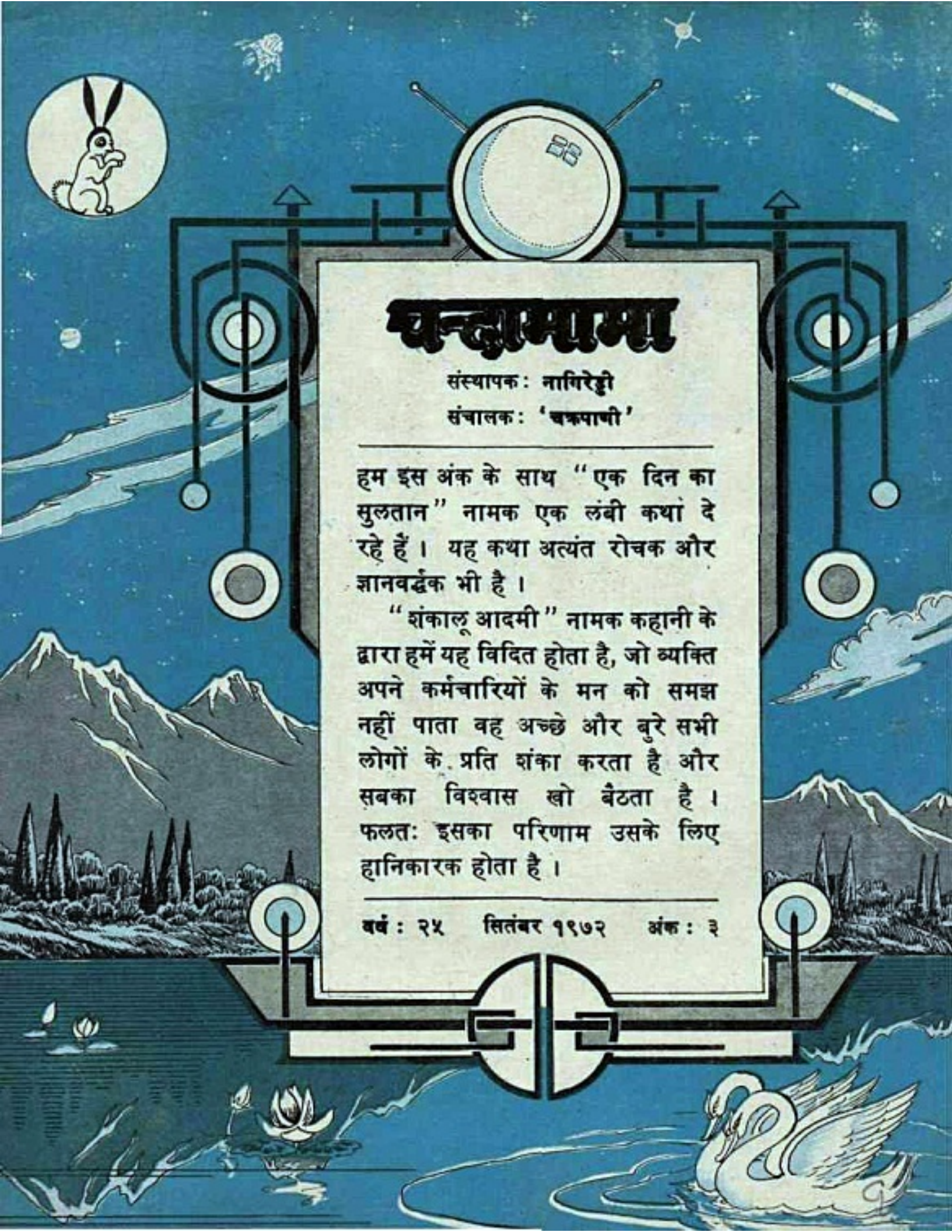
काली मिर्च

चार-पांच सौ साल पहले की बात है।

राजस्थान में नानाजी नामक एक बालक रहता था। बचपन में ही उसके पिता का देहांत हो गया था, इसलिए वह बालक चाचा और काका की देखदेख में पलने लगा।

नानाजी ने राजपूतों के सारे संप्रदाय जान लिये और बचपन में ही उसने घुड़सवारी, धनुर्विद्या इत्यादि सीख ली।

एक बार कोई एक भड़कनेवाले घोड़े को लाया, मगर कोई उस पर सवार न हो पाया। तब नानाजी ने बड़ी आसानी से उस पर कब्जा कर लिया और उस पर सवारी करने लगा। जब कभी उसके काका घोड़ों पर सवार हो घूमने जाते, तब वह भी उनके पीछे घूमा करता। वह घोड़ा नानाजी को छोड़ किसी दूसरे को पास तक पटकने न देता था।

एक दिन एक व्यापारी कांड्ला से राजमहल में कुछ तलवार ले आया। नानाजी उन तलवारों के पास बैठ गया और एक एक तलवार को उठाकर उसकी लंबाई और तेज़ की जांच करता गया। उसे एक भी तलवार पसंद न आयी, इसलिए एक एक करके अलग रखता गया।

व्यापारी ने सोचा कि लड़का तलवार की ख़ूबी से परिचित है, उसने एक अच्छी तलवार उठाकर नानाजी के हाथ दी। उस तलवार को देखते ही नानाजी की आँखें चमक उठीं।

"मुझे एक ऐसी ही तलवार की ज़रूरत थी, सो आज मिल गयी। इस तलवार के मेरे हाथ रहते कोई मुझे जीत नहीं सकता।" नानाजी ने उत्साह में आकर कहा।

इसके बाद नानाजी वह तलवार लेकर अपने काका के पास गया और अनुरोध

किया कि वे उसे खरीद कर दे। "हमारे ज़िंदा रहते तुम्हें तलवार किसलिए बेटा?" एक काका ने पूछा।

"यह तलवार भारी है, तुम इसे धारण नहीं कर सकते।" दूसरे काका ने कहा।

"मेरी उम्र बढ़ती जा रही है, मेरे पास जो तलवार है, वह बहुत ही छोटी है।" नानाजी ने जवाब दिया।

"बेटा, तलवार के लंबा होने से कोई मतलब नहीं, उसे धारण करनेवाले में हिम्मत होनी चाहिये। अगर तलवार छोटी हो तो दुश्मन की ओर एक क़दम आगे बढ़कर लड़ना चाहिये।" काका ने नानाजी को समझाया।

नानाजी ने निराश हो वह तलवार व्यापारी को लौटा दी।

कुछ दिन बीत गये। एक बार लुटेरों ने गाँव पर हमला किया और गायों को हांक ले गये। ऐसी घटना होने पर गाँववाले डफली बजाते हैं, यह एक रिवाज है।

राजमहल में बैठे नानाजी ने डफलियों की आवाज़ सुनी। उसने जब लोगों से पूछा कि यह कैसी आवाज़ है, तब उसे बताया गया कि लुटेरे गायों को हांक ले जा रहे हैं।

नानाजी ने अपने मन में सोचा— "क़िले में मेरे रहते यह कैसे हो सकता है? यह हमारे काका और चाचाओं के

लिए कैसी अपमान की बात है। मेरी माँ क्या मुझे देख शर्मिंदा न होगी!"

तुरंत नानाजी अपने घोड़े पर सवार हो गया। तलवार लिये लुटेरों के पीछे अपने घोड़े को दौड़ाने लगा। बीच जंगल में वह लुटेरों से जा मिला।

लुटेरों के नेता ने नानाजी को देख हंस कर कहा—"अरे छोकरे! तुम्हारी मसें भीगी तक नहीं, तुम यह कैसे सोचते हो कि हम से गायों को छुड़ा ले जाओगे?"

नानाजी ने सोचा कि यह झगड़ा बातों से फैसला होनेवाला नहीं है, वह अपने घोड़े को लुटेरों के नेता के निकट ले गया, और अपनी तलवार निकाल कर हठात् लुटेरों के नेता के सर पर प्रहार किया।

लुटेरों के नेता ने झट अपना सर घुमाया जिससे तलवार की वार से उसकी नाक और मुँह कट गये।

इस पर लुटेरों का नेता क्रोध में आकर गरज उठा—"इस छोकरे को मार डालो।" इस भगदड़ में गायें गाँव की ओर दौड़ पड़ीं। नानाजी ने भी सोचा कि वह अकेले इतने सारे लुटेरों के साथ लड़ नहीं सकता है, इसलिए अपने घोड़े को गाँव की ओर दौड़ाया।

लुटेरों ने नानाजी का पीछा किया, पर उसका घोड़ा इतनी तेजी से दौड़ा कि लुटेरे नानाजी को पकड़ नहीं पाये।

गाँव के लोग गायों को खोकर रो रहे थे, फिर से अपनी गायों को गाँव में देख वे आश्चर्य में आ गये। नानाजी को देख वे लोग बहुत ही खुश हो गये।

किसी की समझ में न आया कि एक छोटे से छोकरे ने गायों को वापस कैसे लौटा दिया।

इसके बाद नानाजी के काका और चाचाओं ने कहा—"बेटा, तुम अभी से यह नटखट क्यों करते हो? बड़े होने पर तुम अनेक साहस के कार्य कर सकते हो?"

"मैं छोटा हूँ तो क्या हुआ? काली मिर्च हूँ! इसमें तीखापन ज्यादा है।" नानाजी ने जवाब दिया।

पाँच रोटियाँ

एक दिन राम और श्याम नामक दो यात्री दूर की यात्रा करके एक गाँव में भटियारिन के घर पर मिले। दोनों ने रात वहीं बितायी, सवेरे जब दोनों रवाना हुए, तब भटियारिन ने रोटियों की पोटलियाँ बनाकर उनके हाथ दीं। राम उदार स्वभाव का था और श्याम कंजूस था। इसलिए भटियारिन ने राम की पोटली में तीन रोटियाँ रखीं और श्याम की पोटली में दो ही रोटियाँ बांध दीं।

दोनों को एक ही रास्ते चलना था। दुपहर के होते-होते दोनों एक तालाब के किनारे के पेड़ की छाया में पहुँचे। उन्हें भूख लगी हुई थी। दोनों तालाब में उतर पड़े। हाथ-मुँह धो लिया। पोटलियाँ खोल खाने बैठे। उस वक्त देखते क्या हैं कि राम की पोटली में तीन रोटियाँ बंधी हैं और श्याम की पोटली में दो।

"देखते हो न, भटियारिन का पक्षपात? उसने तुम्हारी पोटली में तीन रोटियाँ बांध दी है और मेरी पोटली में दो ही रोटियां बांधी है।" श्याम ने कहा।

राम ने हँस कर कहा—"ये तो ऐसी मोटी रोटियाँ हैं कि हम दो रोटियाँ भी नहीं खा सकते। यदि तुम खा सको तो हम ये पांचों रोटियाँ बराबर बांट कर खा लेंगे। मुझे कोई एतराज़ नहीं है।"

राम की बातें सुन कर श्याम को संतोष हो गया। वे दोनों रोटी खाने को ही थे कि तभी उस पेड़ की छाया में सोम नामक एक तीसरा मुसाफ़िर आ पहुँचा।

सोम बोला—"भाइयो, मुझे भी बड़ी भूख लगी है, लेकिन मेरे पास रोटियाँ नहीं हैं। इसलिए तुम लोग अपने खाने में से मुझे भी थोड़ा हिस्सा दोगे तो मैं उसका ऋण चुका लेता हूँ।"

गंगाधर पांडे

"हमारे पास जो रोटियाँ हैं, हम तीनों के लिए पर्याप्त होंगी। तुम भी हमारे साथ खाना खा लो।" राम ने कहा।

सोम भी उनके साथ खाने बैठा। उन रोटियों को तीनों ने बराबर बांटा लिया और अपनी भूख मिटा ली।

सोम ने उन दोनों मुसाफ़िरों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की और ज़बर्दस्ती राम के हाथ में पांच आने देकर चला गया।

राम ने पांच आने में से दो आने निकाल कर श्याम को देते हुए कहा—"भाई साहब, तुम अपना हिस्सा ले लौ। मेरी तीन रोटियाँ थीं। इसलिए इन पांच आने में से दो आने तुम्हें लेना उचित है।"

"यह तो बड़ा अन्याय है। सोम ने हमारी रोटियाँ खाकर कृतज्ञतापूर्वक ये पैसे दिये। इसलिए ये पैसे हमें बराबर बांटने हैं। मुझे आधा आना और मिलेगा, कृपया आधा आना और दो।" श्याम ने कहा।

राम को आधा आना श्याम को देने में कोई आपत्ति न थी, लेकिन श्याम की कंजूसी पर राम को बड़ा क्रोध आया।

"अच्छा, तब तो पास के गाँव के न्यायाधीश के पास चलो। वहीं पर फ़ैसला हो जायगा, तुम्हारा आधा हिस्सा मांगना मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लगता।" राम ने कहा।

दोनों थोड़ी दूर चल कर एक गाँव में पहुँचे। वहाँ के न्यायाधीश के पास जाकर अपने झगड़े का कारण बताया और न्याय करने की प्रार्थना की।

न्यायाधीश ने दोनों की बातें सावधानी से सुनीं और श्याम की ओर मुड़कर बोला—"न्याय के अनुसार तो सोम के दिये पांच आने में से चार आने राम को मिलने चाहिये, तुम्हें एक ही आना मिल सकता है। इसलिए राम ने तुम्हें जो दो आने दिये हैं, उनमें से एक आना उसे वापस कर दो।"

यह फ़ैसला सुन कर श्याम चकित रह गया। उसने मन में सोचा कि न्यायाधीश

को चाहिये था कि वह मुझे आधा आना और दिला देते, लेकिन यह तो एक आना राम को वापस देने के लिए कहता है। इससे राम ही कहीं अच्छे मालूम होते हैं।

"हुज़ूर! यह कैसा न्याय है? हमारी रोटियों के हिसाब से भी देखा जाय तो मुझे दो आने मिलने चाहिये। आप तो मुझे एक ही आना दिला रहे हैं, यह कैसी बात है?" श्याम ने न्यायाधीश से पूछा।

"हाँ, मेरा कहना बिलकुल न्याय संगत है। मैं तुम्हें साफ़ बता रहा हूँ, सुनो, पहले तुम मुझे यह बताओ कि तुम लोगों ने पांच रोटियों को कैसे बांट लिया?" न्यायाधीश ने पूछा।

"साहब, हम ने हर रोटी के तीन तीन बराबर के टुकड़े किये। पांच रोटियों के पंद्रह टुकड़े हुए। उनमें से एक एक ने पांच-पांच टुकड़े खाये।" श्याम ने कहा।

"तुम्हारी रोटियों के कितने टुकड़े हुए?" न्यायाधीश ने फिर पूछा।

"मेरी रोटियों के तो छे टुकड़े हो गये।" श्याम ने जवाब दिया।

"उनमें से पांच टुकड़े तुमने खा लिये। एक टुकड़ा तुमने सोम को दिया। राम की तीन रोटियां थीं, उनके नौ टुकड़े हुए। उनमें से राम ने पांच टुकड़े खाये और चार टुकड़े सोम को दिये। सोम ने जो पांच टुकड़े कुल मिला कर खाये, उनका दाम पांच आने उसने दिये। उनमें से एक टुकड़ा तुम्हारा था और राम के चार टुकड़े थे। इसलिए सोम ने जो पांच आने दिये थे, उनमें से एक आना तुम्हारे लिए और बाक़ी चार आने राम को मिलने चाहिये। अब तुम मानते हो कि मेरा कहना सही है?" न्यायाधीश ने कहा।

इस पर श्याम ने एक आना राम को वापस देना चाहा, लेकिन राम ने नहीं लिया, बल्कि यही कहा–"न्यायालयों में जाने से यही होता है, इसलिए मनुष्य को ज्यादा कंजूस नहीं बनना चाहिये।" इसके बाद राम और श्याम अपने अपने रास्ते चले गये।
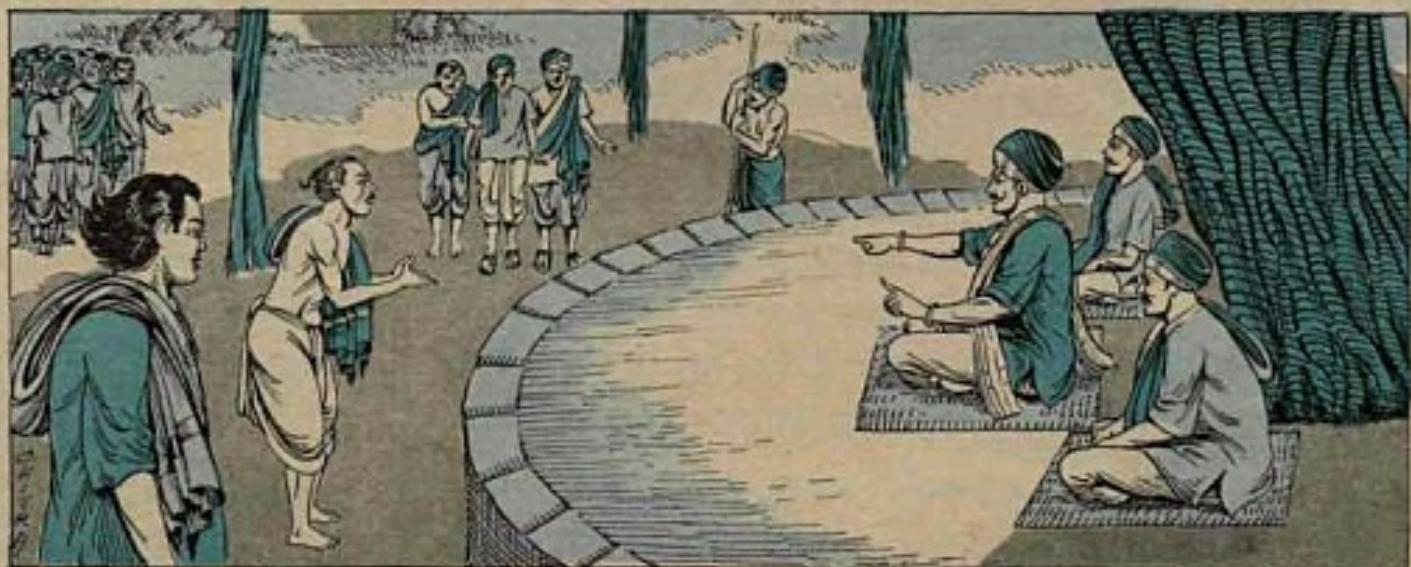
अमर वाणी

ताव न्महताम् महिमा
याव न्न किमपि हि याच्यतेलोक:,
बलि मनुयाचन समये
श्रीपति रपि वामनो जात: । ॥ १ ॥

[बड़ों की महिमा तब तक होती है जब तक वे किसीसे याचना नहीं करते । बलिचक्रवर्ती से याचना करते ही लक्ष्मी देवी का पति वामन बन गया ।]

माता निंदति, नाभि नंदति पिता,
भ्राता न संभाषते,
भृत्य: कुप्यति, नानुगच्छति सुत:,
कांतापि नालिंगते,
अर्थप्रार्थनशंकया न कुरुते
सल्लापमात्रम् सुहृत्,
तस्मा दर्थ मुपार्जय श्रुणिसखे
ह्यर्थेन सर्वे वशा: । ॥ २ ॥

[माता भी दरिद्र की निंदा करती है, पिता उस पर प्रसन्न नहीं होता, भाई भी उससे नहीं बोलते, सेवक भी उस पर नाराज होता है । पुत्र भी साथ नहीं देता, पत्नी भी उसे दूर रखती है। मित्र भी इस ख्याल से उसे दूर रखते हैं कि वह धन माँग बैठेगा । धन हो तो सब अधीन आ जाते हैं । इसलिए प्रत्येक को धन कमाना चाहिए ।]

धन की महिमा

यक्ष पर्वत

[३]

[लुटेरों के नेता ने स्वर्णाचारी को बन्दी बनाया और उसकी मदद से जंगल की एक कुटी में रहनेवाले दो क्षत्रिय युवकों का पता जान लिया। उस वक़्त विघ्नेश्वर पुजारी ने पालतू सिंह को लुटेरों पर उकसाया। सिंह ने झपटकर एक लुटेरे का गला दबाया। –बाद]

अचानक गरजते हुए पालतू सिंह लुटेरों के नेता के एक अनुचर पर कूद पड़ा जिससे वह चौंक उठा। लुटेरों के नेता ने पलभर सोचा कि क्या करना चाहिए, तब भाले को ऊपर उठा कर सिंह पर फेंक दिया। भाला सिंह के एक फुट की दूरी पर जमीन में धंस गया। सिंह ने मौक़ा पाकर लुटेरों पर हमला किया और एक लुटेरे का कंठ पकड़कर उसे लुढ़काने लगा।

लुटेरों के नेता ने एक बार चारों तरफ़ नज़र दौड़ायी। लुटेरों के नेता का जो अनुचर सिंह की पकड़ में आ गया था, उसका ऊँट भड़ककर क्षत्रिय युवकों की कुटी के पीछे के जंगल में भाग गया। एक दूसरे अनुचर के ऊँट पर स्वर्णाचारी सवार था, वह ज़ोर से चिल्ला उठा–"मुझे बचाओ, मुझे बचाओ।"

उसने गलत समझा कि सिंह अपने आहार के वास्ते गाय को पकड़ना चाहता है। इसलिए गाय को छोड़ देने पर वह सिंह के खतरे से बच सकता है।

यह सोचकर लुटेरों के नेता ने अपने अनुचर से कहा–"अरे क़मबख़्त! तुम्हारी बेवकूफ़ी की वजह से हमारा एक साथी नाहक़ मर गया। सिंह का गर्जन सुनते ही तुम गाय को छोड़ देते तो यह ख़तरा पैदा नहीं होता। तब सिंह गाय का पीछा करते जंगल में चला जाता। अब भी सही देरी किये बिना जल्द गाय को छोड़ दो।" इसके बाद वह स्वर्णाचारी की ओर क्रोध भरी दृष्टि दौड़ाते हुए बोला–"अरे वास्तुशास्त्री! अब भी सही तुम अपना मुंह बंद करोगे या तुम्हें ऊंट से नीचे गिराकर सिंह को तुम्हें खाना बना दूं?"

लुटेरों के नेता ने समझ लिया कि वह अपने अनुचर को सिंह की पकड़ में से बचा नहीं सकता। सिंह की पकड़ में आया हुआ अनुचर दो-तीन बार ज़ोर से चिल्ला कर मौन रह गया। तब सिंह ने अनुमान लगाया कि वह मर गया है, तब उसे झटका देकर दूर फेंक दिया और पिछली टांगों पर बैठकर लुटेरों के नेता की ओर घूरने लगा, फिर वह दुधारू गाय की ओर देखता रहा।

इस बार लुटेरों का नेता यह सोचकर डर गया कि सिंह या तो उस पर कूद पड़ेगा या गाय को हांक ले जानेवाले उसके अनुचर पर हमला कर बैठेगा।

ये बातें सुनने पर स्वर्णाचारी को बड़ा संतोष हुआ। क्षत्रिय युवकों का पालतू सिंह उसे अच्छी तरह से पहचानता है। वह उसकी हानि न करेगा। इस कारण से वह भय का अभिनय करते बोला–"हे ऊँटों के नेता! मुझे सिंह का खाना बना दो। मुझे इस बात की खुशी होगी कि कम से कम इस तरह ही सही मैं अपनी जन्मभूमि में मर जाऊँगा।

जन्मभूमि से बढ़कर प्यारी चीज़ कौन हो सकती है?"

लुटेरों के नेता ने पलभर के लिए सोचा कि स्वर्णाचारी को ऊँट से गिराना ही उचित होगा, लेकिन दूसरे ही क्षण उसे स्मरण आया कि उसे तो पहाड़ की तलहटी में राजधानी नगर का निर्माण करना है। इस कार्य में स्वर्णाचारी की सहायता की नितांत आवश्यकता है। इस कारण वह अपने एक अनुचर से बोला— "अरे, सुनो, स्वर्णाचारी को सिंह के सामने मत फेंको। हम जो नगर बसाना चाहते हैं, उसके लिए इसकी मदद की जरूरत होगी। यदि वह तब हमारी बात न मानेगा तो उसे टुकड़ों में काट कर भेड़ियों का आहार बना डालेंगे।"

ये बातें सुनने पर स्वर्णाचारी को मौत का डर सताने लगा। वह सिंह की ओर मुड़ कर चिल्ला उठा, "भीम! भीम!" थोड़ी देर बाद वह फिर चिल्लाने लगा "बचाओ, बचाओ।"

पालतू सिंह का नाम भीम था। वह अपना नाम पुकारते सुन गरज उठा, अयाल झाड़ कर स्वर्णाचारी के बैठे ऊँट पर कूद पड़ा। लेकिन इस बीच लुटेरे ने खतरे की आशंका करके गाय के गले में पड़े रस्से को ढीला किया और ऊँट को

ललकारा। फिर क्या था ऊँट अंधाधुंध ज्वार के खेतों की ओर दौड़ पड़ा। उसके पीछे लुटेरों के नेता ने भी अपने ऊँट को दौड़ा दिया।

विघ्नेश्वर पुजारी कुटी के पीछे खड़े हो ये सारी घटनाएँ देख रहा था। स्वर्णाचारी विघ्नेश्वर पुजारी का घनिष्ट मित्र था, वह सदा सुख के समय ही नहीं बल्कि कठिनाइयों में भी उसका साथ देता था। ऐसे व्यक्ति का लुटेरों के हाथों में बन्दी होना विघ्नेश्बर पुजारी के लिए दुख की बात थी। यदि समय पर क्षत्रिय युवक कुटी में होते यह खतरा उत्पन्न न होता।

ठीक उसी वक़्त क्षत्रिय युवक शिकार खेलना समाप्त कर अपनी कुटी की ओर लौट रहे थे। उस दिन उन्हें अच्छे शिकार हाथ लगे थे। एक युवक के कंधे पर मरा हुआ एक हिरण लटक रहा था। दूसरे युवक के कंधे पर दो जंगली मुर्गियाँ तथा हाथ में चार खरगोश थे। वे बेफ़िक्र बात करते शान के साथ अपनी कुटी की ओर लौट रहे थे।

जब वे दोनों युवक अपनी कुटी के समीप पहुँचे, तब पालतू सिंह धीरे से गुर्राते हुए उनके निकट पहुँचा। एक के पैरों से लिपटने लगा। सिंह को बाहर घूमते देख युवकों के आश्चर्य की सीमा न रही, शिकार खेलने जाते वक़्त युवकों ने उसे पिंजड़े में बन्द कर दिया था, लेकिन वह कैसे बाहर आया? कहीं उसने किसी की जान तो नहीं ली? आख़िर पिंजड़े से यह बाहर तो निकल ही नहीं सकता है। वे तो विस्मय में आ गये।

युवक परस्पर एक दूसरे का चेहरा विस्मय के साथ देख ही रहे थे कि विघ्नेश्वर पुजारी पेड़ों की आड़ में से दौड़ आया और बोला—"महा वीरो, हमारा सर्वनाश हो गया है!"

ये बातें सुन कर दोनों क्षत्रिय युवक पल भर के लिए अवाक् रह गये। उनमें से एक ने पुजारी की ओर तीक्ष्ण दृष्टि से देखते हुए कहा—"सर्वनाश कैसा? तुम और हम तथा चारों तरफ़ का जंगल हरा भरा जो है। फिर यह सर्वनाश कहाँ पर हुआ है! हमें तो इस बात का आश्चर्य हो रहा है कि सिंह का यह शावक पिंजड़े में से बाहर कैसे आया? जल्दी बताओ, क्या हुआ?" इन शब्दों के साथ वह सिंह का अयाल पकड़ कर सहलाने लगा।

विघ्नेश्वर पुजारी ने संक्षेप में सारा वृत्तांत कह सुनाया और कहा—"हे खड्गवर्मा और जीवदत्त! यहाँ पर ज्यादा समय बिताये बिना कुटी के पास चलिये।

वहाँ पर भीम के पंजों की चोटों से मरे पड़े लुटेरे की लाश को देख सकते हैं। ईश्वर की कृपा से दुधारू गाय तथा बछड़ा बच गये हैं।"

पुजारी के मुँह से ये बातें सुनने पर खड्गवर्मा तथा जीवदत्त को आश्चर्य के साथ अपार क्रोध भी आया। अब तक वे लोग केवल यही जानते थे कि वे जिस जंगल में रहते हैं, उसमें अनेक जातियों के आदिमवासी निवास करते हैं, मगर उन लोगों ने कभी ऊँटों को इन प्रदेशों में नहीं देखा था। ऐसी हालत में ऊँटों पर आये हुए लुटेरे न केवल उनकी झोंपड़ी में घुस आये थे, बल्कि अपने अतिथि के समान स्वर्णाचारी को भी जबर्दस्ती उठा ले गये हैं, यही उनके क्रोध का कारण था।

"जीवदत्त! हमें यहाँ अधिक समय खर्च नहीं करना है! पुजारी ने हमें लुटेरों का रास्ता बताया है। हम शीघ्र जाकर स्वर्णाचारी को लुटेरों के हाथों से छुड़ा लेंगे और उन दुष्टों का वध कर डालेंगे।" इन शब्दों के साथ खड्गवर्मा ने म्यान से तलवार खींच ली। खड्गवर्मा का चेहरा तमतमा रहा था।

जीवदत्त ने अपने मित्र के कंधे पर हाथ रख कर कहा–"खड्गवर्मा, बिना

आगा–पीछा सोचे दुश्मन पर हमला कर बैठना खतरे से खाली नहीं है। न मालूम दुश्मन की संख्या कितनी है। जान-बूझ कर उनका हमारी कुटी पर हमला करने में कोई रहस्य छिपा होगा! इन सब बातों पर हमें विचार करना है। अलावा इसके कहीं रेगिस्तानों में सवारी के रूप में काम में लानेवाले ऊँटों को वे दुष्ट इस जंगल में क्यों लाये?...लेकिन पहले हम यह देख लेंगे कि हमारी कुटी से वे क्या क्या उठा ले गये हैं? फिर हम निर्णय कर सकेंगे कि हमें क्या करना है?"

खड्गवर्मा और जीवदत्त आगे जा रहे थे, पीछे चलनेवाले विघ्नेश्वर पुजारी ने
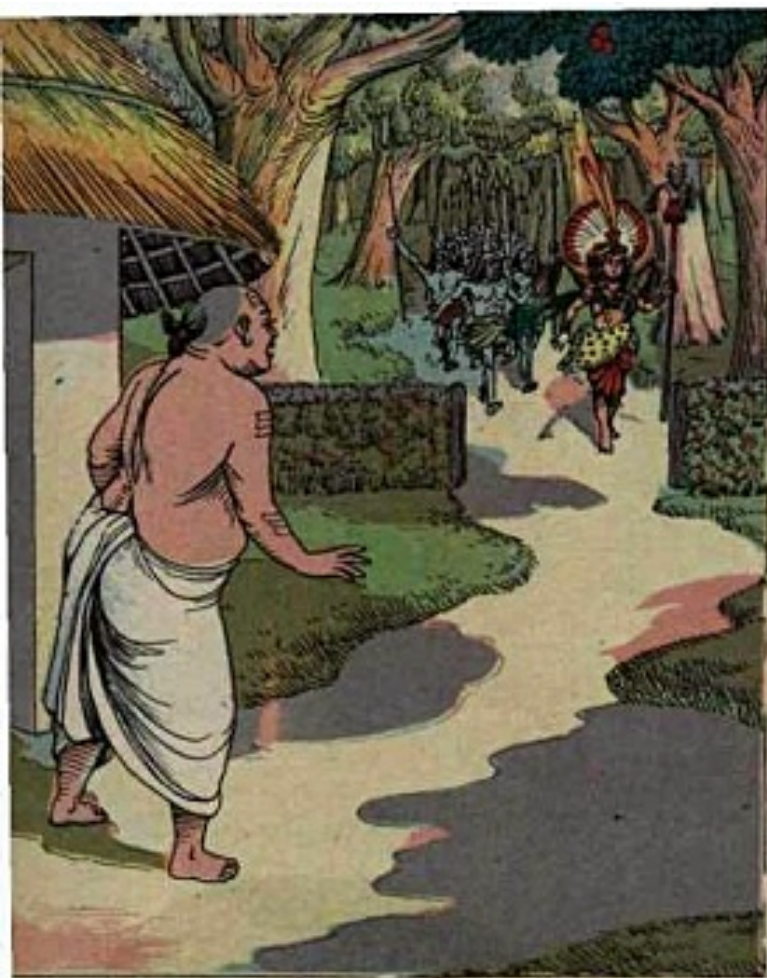
उन्हें रोक कर कहा–"महा वीरो, देखो, इस झाड़ी के पास दुश्मन की लाश पड़ी हुई है। भीम के पंजों की मार से यह मर गया है।"

खड्गवर्मा और जीवदत्त लुटेरे की लाश के पास पहुँचे। खड्गवर्मा ने अपने पैर से लाश को हिलाया। जीवदत्त ने लाश की ओर ध्यान से देख कर कहा–"यह जंगली जाति का नहीं है। इसकी पोशाकों तथा मुख-मुद्रा को देखने पर लगता है कि यह किसी दूर प्रदेश के जंगलों से आया है।"

"यह अगर ज़िंदा रहता तो इसके द्वारा हम सभी रहस्यों का पता लगाते! बेचारा भीम क्या जानता था! क्रोध में आकर उसने इसका गला दबाया है।" खड्गवर्मा ने कहा।

इसके बाद वे दोनों युवक कुटी के भीतर चले गये। वहाँ पर कई चीजें अस्त-व्यस्त पड़ी हुई थीं। दीवार पर लटकनेवाले भाले, धनुष और तरकश भी गायब थे।

"इन लुटेरों को हमारी कुटी में दिखाई गयी क़ीमती चीजें भाले, धनुष और बाण हैं! इन्हें छोड़ना नहीं चाहिये, इनका शिकार करना होगा! ये लोग किधर से आये और कहाँ गये, गैण्ड़े की जाति के लोगों में से कुछ लोगों ने तो ज़रूर देखा होगा।" जीवदत्त ने कहा। इसके बाद पुजारी की ओर मुड़कर कहा–"विघ्नेश्वर पुजारी, तुम जाओ, आस-पास में कहीं कोई गैण्ड़े की जाति का आदमी दिखाई दिया तो उसे यहाँ पर ले आओ।"

विघ्नेश्वर पुजारी कुटी से बाहर आया तो उसने देखा कि बाड़ी के समीप में गैण्ड़े की जाति का नेता अरण्यमल्ल तथा उसके अनुचर वार्तालाप कर रहे हैं, तुरंत विघ्नेश्वर पुजारी उनके पास गया और बोला–"क्षत्रिय युवक शिकार से अभी लौटे हैं, ऊँटों पर आये लुटेरों को क्या तुम लोगों में से किसी ने देखा? वे लोग

मेरे परम मित्र स्वर्णाचारी को उठा ले गये हैं।"

इस पर अरण्यमल्ल का चेहरा पीला पड़ गया। उसने कहा–"पुजारी, हमारा उन लुटेरों को देखना क्या, वे लोग हमारी फसल काट कर ले जा रहे थे, हम उनका सामना करके हार कर भाग आये। मेरे अनुचरों में से कुछ लोगों ने देखा, स्वर्णाचारी एक विचित्र जानवर पर सवार था। खड्गवर्मा और जीवदत्त उस वक़्त यहाँ पर होते तो उन दुष्टों में से एक भी जान से वापस न जाता।"

बाहर का कोलाहल सुन कर खड्गवर्मा तथा जीवदत्त कुटी से बाहर आये। अरण्यमल्ल ने उनके निकट जाकर कहा– "खड्गवर्मा और जीवदत्त जी, हमने बड़ी विपत्ति का सामना किया। हमारी फ़सल के खेतों को लुटरे लूट कर ले गये हैं। हमारी गैण्डे की जाति के लोग जो कभी पराजय का नाम तक न जानते थे, उनकी धाक से घबरा कर अरण्यपुर की ओर भाग आये हैं। अब आप ही लोगों का भरोसा है।"

अरण्यमल्ल की बातें सुनने पर खड्गवर्मा तथा जीवदत्त ने भांप लिया कि ऊँटों पर आये वे लुटेरे सिर्फ़ लूट-खसोट करके अपने दिन काटते हैं। मगर उन्हें इस बात का आश्चर्य भी हुआ कि गैण्डों पर सवार योद्धाओं का उन लुटेरों ने न केवल हिम्मत

के साथ सामना किया, बल्कि वे बड़ी आसानी से हरा सके।

"अरे, तुम राजा होकर भी उन लुटेरों के हाथों में हार गये? तुम्हारे कायरपन को देख तुम्हारे अनुचर क्या सोचेंगे?" खड्गवर्मा ने क्रोध भरे स्वर में कहा।

"महाशय, मैं उन्हें देख भाग आया हूँ, राजा तो लुटेरों के पास तक नहीं आय।" मंत्री शिलामुखी ने आगे बढ़ कर कहा।

"ऐसी बात है, क्या उन लोगों ने ऐसे नये हथियारों का तुम पर प्रयोग किया जिनकी जानकारी हमें न हो! अथवा उन ऊँटों को देख तुम्हारे गैण्ड़े घबरा कर भाग गये?" जीवदत्त ने पूछा।

शिलामुखी ने सारा वृत्तांत सुना कर कहा-"उन लुटेरों के पास भाले और तलवारों को छोड़ कोई नया हथियार नहीं हैं। मगर आप जिस नये जानवर ऊँट की बात बताते हैं, उसे देख न मालूम क्यों हमारे अनुचर डर गये! इसके पहले मेरे सैनिकों ने ऊँट को कभी न देखा था। उन्हें शायद ऊँट कोई डरावना जानवर प्रतीत हुआ होगा।"

"अच्छी बात है, जो होना था, सो हो गया। हमें तो स्वर्णाचारी को उनके क़ब्जे से छुड़ा लाना है। अलावा इसके उन दुष्टों को ऐसा दण्ड देना है जिससे वे कभी इस ओर झांकने की हिम्मत न करे। तुम लोगों में से कुछ लोग जाकर उनके रास्ते का पता लगा लाओ। हम दोनों सूर्यास्त से दो घड़ी पहले यहाँ से रवाना होंगे।" जीवदत्त ने कहा।

जीवदत्त की बातें पूरी भी न हो पायी थीं, तभी अरण्यमल्ल ने अपने चार अनुचरों को निकट बुला कर आदेश दिया कि वे लुटेरों के रास्ते का पता लगा कर सूचित करे, इसके तुरंत बाद वे चारों गैण्ड़ों पर सवार हो पहाड़ी नाले की ओर चल पड़े। (और है।)

अपूर्व मैत्री

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया। पेड़ से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा–"राजन, तुम स्वर्ग के सुखों की कामना से इस प्रकार श्रम उठाते हो तो तुम्हारा प्रयास व्यर्थ हो सकता है। क्यों कि अत्यंत दुष्ट व्यक्तियों को भी स्वर्ग में स्थान मिल जाता है। इसके उदाहरण के रूप में मैं तुम्हें एक छोटी कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनो।"

बेताल यों कहने लगा: वाराणसी में एक गुरुकुल था। उस गुरुकुल में पढ़ने के लिए सभी प्रांतों से ब्रह्मचारी आया करते थे। एक बार उस गुरुकुल में पढ़ने के लिए तेजसिंह नामक दस साल का लड़का आया। वह बड़ा होशियार था। पढ़ते

बेताल कथाएँ

हुए वह रोज जंगल में चला जाता और समिधाएँ ले आता ।

उस जंगल में अघोरदास नामक एक लड़के से तेजसिंह का परिचय हुआ । रोज वे दोनों जंगल में मिलते । अघोरदास तेजसिंह को जंगली जीवन के बारे में विस्तारपूर्वक सुनाया करता । अघोरदास का बाप जंगली जाति का नेता था । वह लूट-खसोट की विद्या में बड़ा निपुण था । सभी नगरों में उसे डाकू कहा करते थे । अघोरदास का बाप जो कुछ लूटता, उसे अपनी जाति के लोगों में बराबर बांट देता था ।

अघोरदास तथा उसकी जाति के लोगों का असभ्य जीवन बिताना तेजसिंह को खटकता था । उसने अपने मित्र अघोरदास से पूछा–"दोस्त, बड़े होने पर तुम भी अपने बाप की तरह डाकू की ज़िंदगी बिताओगे? तुम सभ्य जीवन क्यों नहीं बिताते?"

"कई पीढ़ियों से चली आनेवाली हमारी ज़िंदगी को अचानक में कैसे बदल सकता हूँ? तुम्हारी शिक्षा अलग है और मेरी शिक्षा अलग है । इसी प्रकार तुम्हारी ज़िंदगी और मेरी ज़िंदगी में भी भिन्नता है । अगर मैं तुमसे यह कहूँ कि तुम हमारी जैसी ज़िंदगी बिताओ, तो क्या यह तुम्हारे लिए मुमकिन है? बस, मेरे लिए भी यही बात है ।" अघोरदास ने जवाब दिया ।

उन दोनों मित्रों के बीच सब प्रकार की भिन्नता थी, फिर भी यह भिन्नता उनकी दोस्ती में विघ्न पैदा न कर सकी ।

कुछ वर्ष बाद तेजसिंह की शिक्षा समाप्त हुई, वह अंतिम बार अपने दोस्त अघोरदास से मिलने जंगल में गया और उससे विदा लेकर लौट आया।

इसके कुछ समय बाद तेजसिंह की काशीराजा के दरबार में नौकरी लगी। उधर जंगल में अघोरदास का बाप मर गया, इसलिए वह अपनी जाति का नेता बना। अपने बाप से भी ज्यादा हिम्मत का परिचय देते वह राहगीरों को लूटने लगा।

धीरे धीरे अघोरदास की लूट-खसोट बढ़ गयी। वाराणसी में आने-जानेवाले व्यापारियों के दल अघोरदास के नाम से थर थर कांपते थे। उसे बन्दी बनाने के लिए काशी के नरेश ने कई प्रयत्न किये, पर वे सब असफल हुए। जंगल में जंगलियों के लिए जो स्थानिक बल था, वह राजा के सैनिकों को प्राप्त न था। इसलिए काशी के राजा ने यह घोषणा की कि जो युवक अघोरदास को बन्दी बनायेगा, उसके साथ राजकुमारी का विवाह किया जायगा और साथ ही उसके अनंतर राजगद्दी भी दी जायगी। यह घोषणा सुनकर अनेक योद्धाओं ने अघोरदास को बन्दी बनाने का प्रयत्न किया, लेकिन उन सबके प्रयत्न विफल हुए।

तेजसिंह ने जब अपने बचपन के दोस्त की करतूतों के बारे में सुना, तब वह बड़ा दुखी हुआ। उसने सोचा कि यदि उसने पहले ही कोशिश की होती

तो अघोरदास उसके साथ चला आता और सभ्य जीवन बिताता होता, उसने कड़ा प्रयत्न नहीं किया, यह उसी की भूल है। अब अघोरदास को बन्दी बनाना सिर्फ़ वही जानता है। जंगली जीवन का अच्छा परिचय रखनेवाला काशी राजा के दरबार में सिवाय उसके दूसरा कोई नहीं है। फिर भी उसने बहुत समय तक अघोरदास को बन्दी बनाने का प्रयत्न नहीं किया।

तेजसिंह के देखते-देखते राजधानी का जीवन स्तम्भित हो गया। नगर के व्यापारियों ने दूसरे देशों में जाना बंद कर दिया। साथ ही दूसरे देशों के व्यापारियों का आना भी रुक गया। नागरिक जीवन दिन प्रति दिन दुर्भर होता गया।

उस हालत में तेजसिंह ने जनता के हित के वास्ते अघोरदास को बन्दी बनाना चाहा। वह मुट्ठी भर सैनिकों को साथ ले जंगल में पहुँचा, अघोरदास महाशक्ति की पूजा करने जा रहा था। उसे बन्दी बनाकर राजधानी में ले आया। राजा ने अपने वचन के अनुसार राजकुमारी के साथ तेजसिंह का विवाह किया और साथ ही उसका राज्याभिषेक भी किया।

तेजसिंह ने अघोरदास को आजीवन कारावास की सजा दी और ज़िन्दगी भर उसके लिए भोजन आदि का अच्छा प्रबंध किया। अघोरदास के बन्दी होने के बाद जंगल में चोरियाँ भी बंद हो गयीं। कालांतर में वह बूढ़ा होकर जेल में ही मर गया।

तेजसिंह ने बड़ी दक्षता के साथ शासन किया। अच्छी ख्याति प्राप्त की। जनता के सुख और समृद्धि का ख्याल रखा।

कई साल बाद तेजसिंह ने भी देह त्याग किया। उसे स्वर्ग की प्राप्ति हुई। मगर आश्चर्य की बात यह थी कि स्वर्ग में तेजसिंह ने अघोरदास को पाया। अघोरदास को स्वर्ग में देख तेजसिंह को आश्चर्य हुआ, पर अपने मित्र को स्वर्ग में पाकर

उसे पर्याप्त संतोष भी हुआ। स्वर्ग में भी दोनों की मैत्री बराबर बढ़ती ही गयी।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा– "राजन, अघोरदास डाकू है, चोर है, पापी है। पर तेजसिंह मित्र के साथ दगा देकर वह भी पापी बन गया है। ऐसे दो पापियों को स्वर्ग की प्राप्ति कैसे हो गयी? तेजसिंह की शिक्षा समाप्त होने पर उनके रास्ते भिन्न हो गये थे, पर स्वर्ग में वे दोनों रास्ते कैसे मिले? उनकी दोस्ती फिर से क्यों चालू हो गयी? इन सवालों का जवाब जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा।"

इस पर विक्रमार्क ने यों जवाब दिया– "तेजसिंह और अघोरदास दो भिन्न आदर्शों के व्यक्ति हैं। उनके समाज, संस्कृति और जीवन-पद्धतियाँ भी भिन्न हैं। अपने अपने आदर्श का पालन करना पाप नहीं कहलाता। जंगली जाति के नेता के रूप में अघोरदास ने डाके डाले, लूट-खसोट किया और अपनी जाति का उत्थान करके पुण्य कमाया। इसी प्रकार तेजसिंह ने अघोरदास के लूट-खसोट को रोककर अपने समाज का हित किया और इस प्रकार पुण्य प्राप्त किया। उसने राजकुमारी के वास्ते या राज्य अथवा किसी अन्य स्वार्थ के हेतु अघोरदास को बन्दी नहीं बनाया। इस कारण दोनों को स्वर्ग प्राप्त हुआ है। अब रही मित्रता की बात! मित्रता तो दो व्यक्तियों के बीच उत्पन्न होनेवाली भावना है। इसका समाज के साथ कोई संबंध नहीं है, इसीलिए तेजसिंह की अपनी विद्यार्थी दशा में ही अघोरदास के साथ मैत्री हुई। इस लोक को छोड़ने के बाद केवल व्यक्ति रह जाते हैं लेकिन सामाजिक धर्म नहीं। सामाजिक धर्म केवल इस संसार से संबंधित हैं। इस कारण से स्वर्ग में उनकी मैत्री अविच्छिन्न चलती रही।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

पाप नहीं होता

एक बार एक संन्यासी लोगों को उपदेश दे रहे थे। वहाँ पर दो चोर आ पहुँचे। उनमें से एक ने सन्यासी की सोने की थाली चुपके से हड़प ली। इसे देख दूसरे चोर ने कहा–"अरे, सन्यासी की संपत्ति की चोरी करना पाप है!"

"सन्यासी ही देंगे तो पाप नहीं होता है न?" पहले चोर ने पूछा।

उपदेश के समाप्त होने पर सब लोग चले जा रहे थे। तब पहले चोर ने सन्यासी के पास जाकर पूछा–"स्वामीजी, मैंने एक अपराध किया है। सोने की एक थाली की चोरी की है?"

"उसे ले जाकर उसके मालिक को दे दो, तुम्हें पाप नहीं लगता।" सन्यासी ने जवाब दिया।

"मैं उसे आप ही को दे देता हूँ, लीजिये।" चोर ने कहा।

"मुझे नहीं चाहिये, वह जिसकी हो, उसे ही दे दो।" सन्यासी ने कहा।

"यदि वे न लेंगे तो?" चोर ने पूछा।

"तब तुम्हीं रख सकते हो।" सन्यासी ने उत्तर दिया।

पहले चोर ने सन्यासी को प्रणाम किया और दूसरे चोर के साथ चला गया।

शंकालू आदमी

एक शहर में सेठ सोमगुप्त नामक एक बनिया था। वह व्यापार के साथ सूद का व्यापार भी किया करता था। उसके यहाँ कल्लू नामक एक बड़ा गुमाश्ता और मल्लू नामक एक छोटा गुमाश्ता था। घर का काम-काज देखने एक नौकर को भी रखा गया था। ये तीन विश्वासपात्र थे, मगर सोमगुप्त का उन तीनों पर बिलकुल विश्वास न था, क्योंकि वह शंकालू आदमी था। मगर खूबी यह थी कि सेठ अपनी शंका को प्रकट होने न देता था। उसका व्यवहार देख हर कोई यही सोचते कि उस पर सेठ का अपार विश्वास है।

एक बार सेठ को व्यापार के काम पर किसी दूर के शहर में जाना पड़ा। घर से निकलते समय उसने सेठानी से कहा–"अरी, मेरे लौटने तक तुम नौकर पर नज़र रखो, वह विश्वासपात्र नहीं है।"

सेठानी ने कहा–"अच्छी बात है।"

इसके बाद सेठ ने नौकर को अलग बुलाकर समझाया–"अरे, मैं तुम्हें छोड़ किसी पर विश्वास नहीं करता। तुमको एक काम करना होगा, समझें!"

"कहिये, सेठ साहब! आप जैसा कहेंगे, वैसा करूँगा।" नौकर ने कहा।

"वैसे बात तो कुछ नहीं है, हमारा छोटा गुमाश्ता मल्लू है न, उसका स्वभाव ठीक नहीं है। मेरे लौटने तक तुम उस पर नज़र डाले रहो, मगर याद रखो कि उसे तुम पर संदेह न हो!" सेठ ने समझाया।

"अच्छी बात है, मालिक! आप निश्चित रहिये।" नौकर ने जवाब दिया।

इसके बाद सेठ ने छोटे गुमाश्ते मल्लू को एकांत में बुलाकर समझाया–"मल्लू, मैं तुम पर भरोसा करके शहर जा रहा हूँ!

रतनलाल जैन

हमारा बड़ा गुमाश्ता कल्लू जो है, यक़ीन करने लायक़ नहीं, उस पर जरा अंख डाले रहो!"

मालिक का अपने ऊपर अपार विश्वास देख मल्लू फूला न समाया और बोला– "साहब, आप फ़िक्र न कीजिये। मैं उस पर हज़ार आँख लगाये देखा करूँगा ताकि वह आपको धोखा न दे सके।"

आख़िर सेठ बड़े गुमाश्ते कल्लू के कमरे में जाकर बोला–"कल्लू, मैं शहर जा रहा हूँ। तुम्हें विशेष रूप से समझाने की ज़रूरत नहीं है। व्यापार के लेन-देन में होशियारी से काम लो! हर किसी पर विश्वास मत करो।"

इस प्रकार सेठ सबको समझा-बुझाकर दूसरे शहर को चल पड़ा। सब लोग अपने अपने काम बड़ी मुस्तैदी के साथ करते रहे! दो-चार दिन बीत गये। बड़े गुमाश्ते कल्लू को संदेह हुआ कि छोटा गुमाश्ता मल्लू उस पर निगरानी रख रहा है। छोटे गुमाश्ते ने भांप लिया कि घर का नौकर उस पर संदेह कर रहा है। नौकर ने अंदाज़ लगाया कि सेठानी उसके हर काम पर संदेह कर रही है।

मगर कोई यह समझ न पाया कि यह सब सेठ साहब की करतूत है। सबने यही सोचा कि उन पर जो निगरानी रख रहा है, सेठ के द्वारा उसे दण्ड दिलाया जाय! इसके लिए वे आवश्यक योजना बनाने लगे।

एक दिन बड़ा गुमाश्ता कल्लू बिना किसी से कहे छोटे गुमाश्ता मल्लू के सामने ही बड़े-बड़े थालों में चावल और दाल तथा एक लोटे भर घी लेकर चल पड़ा। इसे देख मल्लू उछल पड़ा। सेठ को इसकी ख़बर देने के लिए उसने एक कागज़ पर उन चीज़ों की फेहरिश्त लिख कर रखा। वह सेठ की प्रशंसा पाना चाहता था।

दूसरे दिन नौकर के देखते छोटे गुमाश्ता मल्लू ने रुपयों की थैली अपनी जेब में डाल ली। नौकर यह सोचकर

उछल पड़ा कि चोर हाथ लग गया है। उसने उस घटना का समय और तिथि भी नोट कर ली।

तीसरे दिन सेठ के घर एक सब्जीवाली आ धमकी। नौकर अपने कामकाज छोड़ कर उस औरत से परिहास करने लगा।

इसे देख सेठानी ने नौकर को धमकी दी–"अरे दुष्ट, तू मेरे सामने उस औरत का मजाक उड़ाते हो? तेरी ऐसी हिम्मत? सेठ साहब को आने दो! तेरी चमड़ी उधेड़वा दूंगी!"

"सेठजी से मैं थोड़े ही डरता हूँ?" नौकर ने सेठानी को उकसाया।

सेठजी के शहर से लौटने पर नौकर पर सेठानी ने शिकायत की तो छोटे गुमाश्ते पर नौकर ने और बड़े गुमाश्ते पर छोटे गुमाश्ते ने गुप्त रूप से शिकायत की।

सब की शिकायतें सुनने के बाद सेठजी ने सबको एक जगह इकट्ठा किया और कहा–"देखो, मेरी गैर हाज़िरी में तुम तीनों ने न्याय और धर्म को तिलांजली देकर मेरे घर को लूट लिया है। तुम लोगों जैसे नमक हरामों को मेरे यहाँ जगह देना मेरी मूर्खता तो नहीं है?"

बड़े गुमाश्ते कल्लू ने सेठ साहब से पूछा–"साहब, आप जो कुछ कहना चाहते हैं, सो साफ़-साफ़ बता दीजिये।"

"बताना क्या है? तुम तीनों ने जो दगाबाजी की, उसके लिए मेरे पास सबूत है। मैं गवाहों के द्वारा तुम लोगों की धोखेबाजी की पोल खोल दूं तो क्या अपने अपराध को स्वीकार करोगे?" सेठ ने पूछा। इस पर सब ने मान लिया।

तब सेठ ने बड़े गुमाश्ते से कहा–"क्या तुम अमुक दिन बड़े-बड़े थालों में चावल-दाल और लोटे भर घी नहीं ले गये?"

इस पर कल्लू ने समझाया–"सेठ साहब! उस दिन श्रावण शुक्रवार था, उसी दिन लक्ष्मी का व्रत भी पड़ता था। उस दिन हम ब्राह्मणों को चावल-दाल

और घी भी दिया करते हैं। मैंने यही काम किया है।"

सेठ ने आश्चर्य में आकर कहा–"हाँ, हाँ! अब मुझे याद आया। तुम बुरा न मानो। मगर यह मल्लू है न! इसको रुपयों की थैली को अपनी जेब में डालते नौकर ने स्वयं देख लिया है।"

तब मल्लू ने कहा–"हाँ, सेठ साहब मैंने रुपयों की थैली अपनी जेब में डाली है। मगर वह मेरी तनख़्वाह की रक़म थी। मैंने हिसाब-क़िताब में लिख रखा है। आप देख लीजिये।"

सेठ साहब घबरा उठा और बोला–"हाँ, हाँ! वह तो तनख़्वाह का दिन था। मुझे याद ही नहीं आया। फिर भी जो शिकायत करता है, उसे तो अक्ल होनी चाहिये। तुम बुरा मत समझो।"

इसके बाद सेठ साहब ने नौकर की ओर मुड़कर कहा–"अरे, तुम बताओ, तुम काम करना बंद करके सब्जीवाली के साथ प्रेमालाप कर रहे थे? सच बताओ?"

"सेठ साहब! यह बात है! वह औरत और कोई न थी, मेरी पत्नी थी: सेठानी जी को शायद यह बात नहीं मालूम है। इसीलिए उन्होंने नमक मिर्च लगा कर आप से कुछ कह दिया होगा!" ये बातें कहते नौकर लजा गया।

इस तहक़ीकात के बाद तीनों ने जान लिया कि सेठ साहब ने ही उनके बीच नाहक़ संदेह पैदा कर दिया है। इस पर उन्हें सेठ के प्रति क्रोध आया। उन तीनों ने सेठ साहब के पास जाकर कहा–"मालिक! आप जैसे शंकालू व्यक्ति के पास काम करने से हम भी एक न एक दिन नमक हराम बन सकते हैं; इसलिए आइंदा हम आप के यहाँ काम करना नहीं चाहते। कृपया आप हमें नौकरी से छुट्टी दिला दीजिये।" ये शब्द कहकर वे तीनों सेठ के घर से चल पड़े।

सेठ ने जान लिया कि विश्वास पात्र नौकरों पर शक करना उसी की भूल थी!

शक्ति की महिमा

सैकड़ों साल पहले की बात है। काशी नगर में रईदास नामक एक चमार रहा करता था। कबीरदास का गुरु रामानंद ही रईदास का भी गुरु था। उस जमाने के मशहूर हिन्दी कवियों में रईदास भी एक था। रईदास अपने पेशे के अनुसार चप्पल सीकर अपनी जिंदगी बसर करता था। एक दिन वह अपने औजारों को लेकर अपनी जगह बैठे हुए था। मगर उस दिन बड़ी देर तक रईदास के पास कोई ग्राहक न आया।

शाम के समय एक ब्राह्मण उस रास्ते से गुजरा। अपने टूटे हुए जूतों को रईदास के सामने डालते हुए उनकी मरम्मत करने को कहा। रईदास ने जूते सीते हुए पूछा– "पंडितजी, आप किस गाँव के हैं? किस काम से आये हैं?"

ब्राह्मण ने गंभीर होकर उत्तर दिया– "मैं कावेरी नदी तट का निवासी हूँ। गंगाजी में स्नान करके पवित्र होने के ख्याल से यहाँ आया हूँ।"

इस पर रईदास ने कहा–"महाशय, क्या आप की कावेरी नदी में जल नहीं है? आप स्नान करने के वास्ते काफ़ी श्रम उठा कर इतनी दूर पैदल चलकर आये?"

ब्राह्मण ने चकित हो कर कहा–"यह तुम क्या कहते हो? गंगाजी के किनारे काशी में निवास करते हुए तुम ऐसी बातें क्यों कहते हो? लगता है कि तुम गंगाजी की महिमा से अपरिचित हो! क्या तुमने कभी गंगाजी में स्नान भी किया?"

"महाशय, मैंने आज तक कभी गंगाजी में स्नान नहीं किया।" रईदास ने कहा।

इस पर उस ब्राह्मण को रईदास की हालत पर बड़ी दया आयी। उसे गंगाजी की महिमा का सारा वृत्तांत सुनाया और कहा–"यह तो तुम्हारा दुर्भाग्य है कि

बिमला यादव

तुमने गंगा में स्नान नहीं किया। सच कहूँ तो तुम्हारी ज़िंदगी बेकार है।"

इस पर रईदास ने उत्तर दिया–"मन है तो चंगा, कठौती में ही गंगा है।"

इन शब्दों के साथ रईदास ने जूते सीने का काम पूरा किया और ब्राह्मण से पूछा–"पंडितजी, क्या आप मेरी एक छोटी सी मदद कर सकते हैं?"

ब्राह्मण ने जवाब दिया–"मुझसे बन पड़ा तो ज़रूर करूँगा।"

"मेरी ज़िंदगी का तीन चौथाई हिस्सा यहीं पर बीत गया। मैं नहीं जानता कि गंगाजी के दर्शन करने का भाग्य मेरी क़िस्मत में बदा है कि नहीं, मगर आप मेरी इतनी सहायता कीजिये। आप गंगा में स्नान करते समय मेरे नाम पर यह सुपारी गंगाजी को समर्पित कीजिये।" इन शब्दों के साथ रईदास ने अपनी थैली में से एक सुपारी निकाल कर ब्राह्मण के हाथ रख दिया।

ब्राह्मण सुपारी लेकर चला गया। इसके बाद गंगा में नहाते समय ब्राह्मण ने यह कहकर गंगा की धारा में सुपारी छोड़ दी–"गंगा माई! रईदास ने तुम्हें यह भेंट दी है। स्वीकार करो।"

उस वक़्त अचानक पानी में से एक सुंदर हाथ ऊपर उठा। उस हाथ में नव रत्न खचित एक कंगण चमक रहा था। "इसे रईदास को भेंट दो।" कहीं से ये शब्द सुनाई दिये।

ब्राह्मण एकदम अवाक् रह गया। वह उस कंगण को लेकर किनारे पर आया। बड़ी देर तक सोचने के बाद उसने यों निर्णय किया—"जूते सीनेवाले रईदास को असल में यह कैसे मालूम होगा कि उसकी सुपारी के बदले गंगाजी ने हीरों का कंगण दिया है? इसलिए फिर उसके पास जाकर यह कंगण उसे सौंप देना निरी मूर्खता ही होगी। यदि इसे कहीं बेचना है तो राजभट मुझे पकड़कर बंदी बनायेंगे; इसलिए इसे सीधे ले जाकर राजा को भेंट दे तो बदले में मेरा सत्कार हो सकता है! गंगामाई की कृपा से इस तरह मेरी दरिद्रता दूर हो सकती है!"

यह निर्णय करके ब्राह्मण सीधे काशी राजा के दरबार में गया, राजा को आशीर्वाद देकर उसे कंगण भेंट किया।

उस रत्नखचित कंगण को देख राजा के साथ सभी राजदरबारी आश्चर्यचकित हो गये। दरबार के जौहरियों ने उस कंगण की जाँच करके बताया कि यह तो देवलोक से संबंधित है, मानवलोक से संबंधित कंगण नहीं है। इस पर राजा ने अत्यंत प्रसन्न हो ब्राह्मण का दिल खोलकर सत्कार करना चाहा और उस कंगण को अपनी रानी के पास अंत:पुर में भेजा।

उस कंगण को देख रानी अत्यंत प्रसन्न हुई, उसे अपने दायें हाथ में पहन लिया। तब वह सीधे राज दरबार में आयी और

ब्राह्मण से बोली–"विप्रवर, यदि इस कंगण की शोभा बढ़नी है तो इसका जोड़ा भी होना चाहिए। इसलिए आप दूसरा कंगण भी लाने की कृपा करें।"

रानी की ये बातें सुनकर ब्राह्मण का चेहरा पीला पड़ गया। उसने स्वप्न में भी न सोचा था कि बात यहाँ तक बढ़ेगी! इसलिए उसने राजा से निवेदन किया कि इस कंगण का जोड़ा प्राप्त करना उसके लिए असंभव है।

राजा ने ब्राह्मण की बात को काटते हुए कहा–"शाम के अंदर तुम इसका जोड़ा न ला सकोगे तो हम समझेंगे कि तुमने इस कंगण की चोरी की है।"

ब्राह्मण का दिल बैठ गया। वास्तव में उसने जो किया, एक प्रकार से वह चोरी ही कहलायेगी! उसकी सजा मौत है। अतः ब्राह्मण ने राजा को यह आश्वासन दिया कि वह शाम के अंदर उस कंगण का जोड़ा लाने का प्रयत्न करेगा और राजा से अनुमति लेकर चल पड़ा। ब्राह्मण कहीं भाग न जाये, इसके लिए राजा ने कुछ राज भटों को उसके साथ कर दिया।

इसके बाद ब्राह्मण सीधे रईदास के पास गया, सारा वृत्तांत सुना कर उसके पैरों पर गिर पड़ा और उसे बचाने की मिन्नत की।

रईदास ने आंखें मूंद कर गंगाजी का ध्यान किया और ब्राह्मण को बचाने की प्रार्थना की। इसके बाद चमड़े के टुकड़ों को गलानेवाले बर्तन में हाथ डाल कर रईदास ने एक दूसरा कंगण बाहर निकाला। इस दृश्य को देख वहाँ पर इकट्ठे हुए लोग आश्चर्य में आ गये।

ब्राह्मण ने रईदास के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की और उस कंगण को ले जाकर राजा को समर्पित किया।

भटों के द्वारा राजा ने सारा समाचार सुना और रईदास से निवेदन किया कि वह जूते सीना छोड़ दे तो उसके ठहरने व खाने-पीने का बढ़िया इंतजाम किया जायगा, लेकिन रईदास ने न माना।

एक दिन का सुलतान

बात उस जमाने की है, जब बग्दाद में हारूनल रशीद शासन करता था। उसके राज्य में एक विचित्र ब्रह्मचारी था जिसका नाम अबू अल हसन था। वह रोज नगर की नदी के पुल के छोर पर खड़ा होता और नगर में प्रवेश करनेवाले नये व्यक्ति को पकड़ लाता और अपने घर आतिथ्य स्वीकार करने का निवेदन करता। अबू अल हसन को इस बात की फ़िक्र न थी कि अतिथि चाहे अमीर हो या गरीब, बूढ़ा हो या जवान, मगर वह अजनबी हो और दूसरे गाँव का है, यह ज़रूरी है। एक रात को यदि कोई मेहमान उसके घर आतिथ्य पाता तो उसे वह दूसरे दिन सवेरे ही विदा कर देता। अगर वह मेहमान नगर में फिर दूसरी बार दिखाई दे तो भी हसन इस तरह चला जाता, मानों उसे देखा तक न हो। उसका यह व्यवहार अड़ोस-पड़ोसवालों को बड़ा ही विचित्र मालूम होता।

एक दिन सूर्यास्त के समय अबू अल हसन पुल के छोर पर खड़ा ही था, कि मोसल शहर का एक व्यापारी नगर की ओर आया। उसके साथ एक दीर्घकाय गुलाम भी था।

वह व्यापारी और कोई न था, बल्कि बेश बदल कर नगर के आस-पास के प्रदेशों की निगरानी करके लौटनेवाला खलीफ़ा ही था। लेकिन यह बात अबू अल हसन नहीं जानता था। इसलिए उसने व्यापारी के सामने जाकर झुक कर सलाम किया और उस रात को अपने यहाँ अतिथि बनने का स्वागत किया—"आज रात को आप मेरा आतिथ्य स्वीकार कीजियेगा तो कल सुबह आप सराय में ठहरने का प्रबंध कर सकते हैं।"

खलीफ़ा को अबू अल हसन का व्यवहार विचित्र लगा। खलीफ़ा ने सोचा कि ऐसे व्यक्ति के परिचय के द्वारा नया अनुभव प्राप्त हो सकता है। यह सोचकर उसने हसन के आतिथ्य को स्वीकार किया और उसके साथ घर चला गया।

हसन की मां ने बड़े ही स्वदिष्ठ व्यंजन तैयार किये और खाना परोसा। दोनों ने खाना समाप्त करके बातचीत करते हुए शराब पीने का उपक्रम किया। हसन ने अपने अतिथि से कहा—"आपके आगमन से मुझे बड़ी खुशी हो रही है।"

खलीफ़ा ने कहा—"भाई, तुम इस तरह अजनबियों को आतिथ्य क्यों देते हो?"

इस पर उसने यों कहा—"मेरा नाम अबू अल हसन है। मेरा बाप एक व्यापारी है। मरते समय मेरे लिए अच्छी जमीन-जायदाद छोड़ गये हैं। मेरे बाप ने मुझे बचपन से ही बुरी संगत में बचाते हुए पाला-पोसा, लेकिन उनके मरने के बाद सुख-भोगों की लालसा मेरे मन में पैदा हो गयी। फिर भी मैं मूर्ख न था। इसलिए मैंने अपनी संपत्ति को दो भागों में बाँट दिया। आधे हिस्से को मैंने वस्तुओं के रूप में सुरक्षित रखा, बाक़ी नक़द को खर्च करते हुए अपने दोस्तों के साथ इस तरह की जिंदगी बितायी, मानों मैं कोई करोड़पति हूँ। मैंने सुख-भोगों के पीछे अपार धन खर्च कर दिया। ठीक

एक वर्ष के पूरा होते-होते मेरे हाथ एक कौड़ी भी न बची। उस हालत में मैंने अपने मित्रों की सहायता मांगी। मगर किसीने मेरी मदद नहीं की। मैंने उनसे अपनी बुरी हालत का जिक्र किया, उन सबने कोई न कोई बहाना बताया, लेकिन एक जून भी मुझे खाना नहीं खिलाया। तब मुझे अपने पिता का स्मरण आया। मैंने यह भी समझ लिया कि मेरे पिता ने बचपन में मुझ पर क्यों कड़ा नियंत्रण रखा और बुरी संगत में पड़ने से बचाया। मैंने घर लौटकर यह शपथ की कि मैं आइंदा मित्रों के साथ नहीं घूमूंगा, और अपरिचितों को छोड किसी को आतिथ्य न दूंगा। मैंने अपने अनुभव के द्वारा यह जान लिया कि दीर्घकाल की मैत्री की अपेक्षा क्षणिक स्नेह ही अत्यंत मधुर होता है। यह भी शपथ खायी कि अपविचितों के साथ भी एक साथ दो दिन की मैत्री न करूँगा। इसलिए यदि कल सुबह में आपको विदा कर दूं तो आपको आश्चर्य चकित होने की ज़रूरत न होगी। हमारी यह मैत्री आज की रात के साथ समाप्त हो जाती है।"

हसन की बातें सुनकर खलीफ़ा ने कहा— "तुम्हारा यह व्यवहार मुझे कुछ अजीब सा ज़रूर लगता है, किंतु इसमें विवेक-शीलता दीखती है। यह बात भी प्रशंसनीय है कि तुमने भविष्य का ख्याल रखते हुए आधी संपत्ति बचा रखी। लेकिन यह

सोचकर मुझे चिंता हो रही है कि कल सुबह हम दोनों विदा होनेवाले हैं। तुमने मेरा जो अतिथि-सत्कार किया, उसका ऋण में रखना नहीं चाहता! इसलिए तुम्हारे मन में अगर कोई इच्छा हो तो बता दो, अल्लाह की मेहरबानी से ऐसी कोई तुम्हारी इच्छा न होगी जिसकी पूर्ति में न कर सकता हूँ!"

ये बातें सुनकर हसन बिलकुल अचरज में न आया, उसने विनयपूर्वक कहा–"आपका परिचय हुआ, यही मेरे लिए बहुत है। मगर मेरे मन में ऐसी कोई इच्छा नहीं है जिसकी पूर्ति कर सकूं! मैं अपनी ज़िंदगी से बिलकुल संतुष्ट हूँ।"

"मेरी इच्छा का तिरस्कार करोगे तो मुझे बड़ा दुख होगा। तुम कोई इच्छा प्रकट न करोगे तो मेरा अपमान होगा। अपकार का सहन किया जा सकता है, मगर उपकार के बोझ से मैं दबा जाऊँगा। उदार व्यक्ति को चाहिये कि वह दूसरों से जो उपकार पाता है, उसका दुगुना उपकार करे।" खलीफ़ा ने कहा।

अपने अतिथि का हठ देख हसन थोड़ी देर तक सोचता रहा, फिर बोला–"यह सच है कि मेरे मन में एक इच्छा जरूर है, लेकिन मैं वह इच्छा प्रकट करूँ तो आप मुझे बावला समझेंगे।"

"आप की इच्छा जाने बिना मैं यह कैसे मानूं कि वह किसी बावले की इच्छा है। वैसे मैं व्यापारी हूँ, मगर तुम मेरे बारे में जो अंदाज़ लगाते हो, मैं उससे कहीं अधिक सामर्थ्य रखता हूँ! इसलिए तुम अपनी इच्छा बिना संकोच के बता दो।" खलीफ़ा ने कहा।

"आप पूछ रहे हैं, इसलिए मैं बता देता हूँ, लेकिन मेरी इच्छा की पूर्ति करने की ताक़त सिर्फ़ खलीफ़ा रखते हैं। मेरी इच्छा यह है कि कम से कम एक दिन मैं हारूनल रशीद की जगह खलीफ़ा बनकर बैठूं!" हसन ने अपनी इच्छा बतायी।

खलीफ़ा ने पलभर सोच कर पूछा–"तुम

एक दिन के लिए खलीफ़ा बन कर क्या करना चाहते हो?"

"साहब! यह बग्दाद चार मुहल्लों में बंटा हुआ है। हर एक मुहल्ले पर एक एक प्रधान अधिकारी नियुक्त है। हमारे मुहल्ले का अधिकारी बड़ा नीच और दुष्ट है। उसे इन दुष्ट कार्यों में मदद देनेवाले दो सहायक भी हैं। उनमें एक भालू जैसे मुंहवाला है और दूसरा गंजा सिरवाला है। ये दोनों प्रतिष्ठित व्यक्तियों के रहस्यों का पता लगा लेते हैं। उन्हें अपयश का शिकार बना देते हैं। धन के वास्ते तरह-तरह के अपचार करते हैं। साधु और सज्जन पुरुषों का अपमान करते हैं। उनका वध भी करते हैं। मैं एक दिन का खलीफ़ा बन जाऊँगा तो एक कौड़ी भी न लूंगा। मुझे धन की बिलकुल ज़रूरत नहीं है। अपने मित्रों व परिचितों को भी एक कौड़ी भी न दूंगा, मगर हमारे मुहल्ले को इन तीनों दुष्टों का पिंड छुड़ा लूंगा। उन तीनों की लाशों को खाई में फेंकवा दूंगा।" हसन ने समझाया।

"सचमुच तुम्हारी इच्छा तारीफ़ करने लायक़ है। तुम्हारी इच्छा की पूर्ति करना भी कोई मुश्किल की बात नहीं है, क्यों कि खलीफ़ा विचित्र अनुभव प्राप्त करने का कुतूहल रखनेवाले हैं। उनके सामने तुम्हारी इच्छा प्रकट की जाय तो वे तुम्हें एक दिन और एक रात के लिए खलीफ़ा की गद्दी दे सकते हैं।" खलीफ़ा ने कहा।

इस पर अबू अल हसन ने हँस कर कहा–"हम दोनों यूँ ही वक़्त काटने के लिए ये बातें कर रहे हैं, मगर खलीफ़ा को मेरी इच्छा मालूम हो जायगी तो मुझे पागलखाने में बन्दी बना देंगे। इसलिए आपसे मेरी यही बिनती है कि खलीफ़ा के दरबार में यदि आपके कोई जान-पहचान के हो तो उनसे मेरी बकवास की बातें त कहियेगा।"
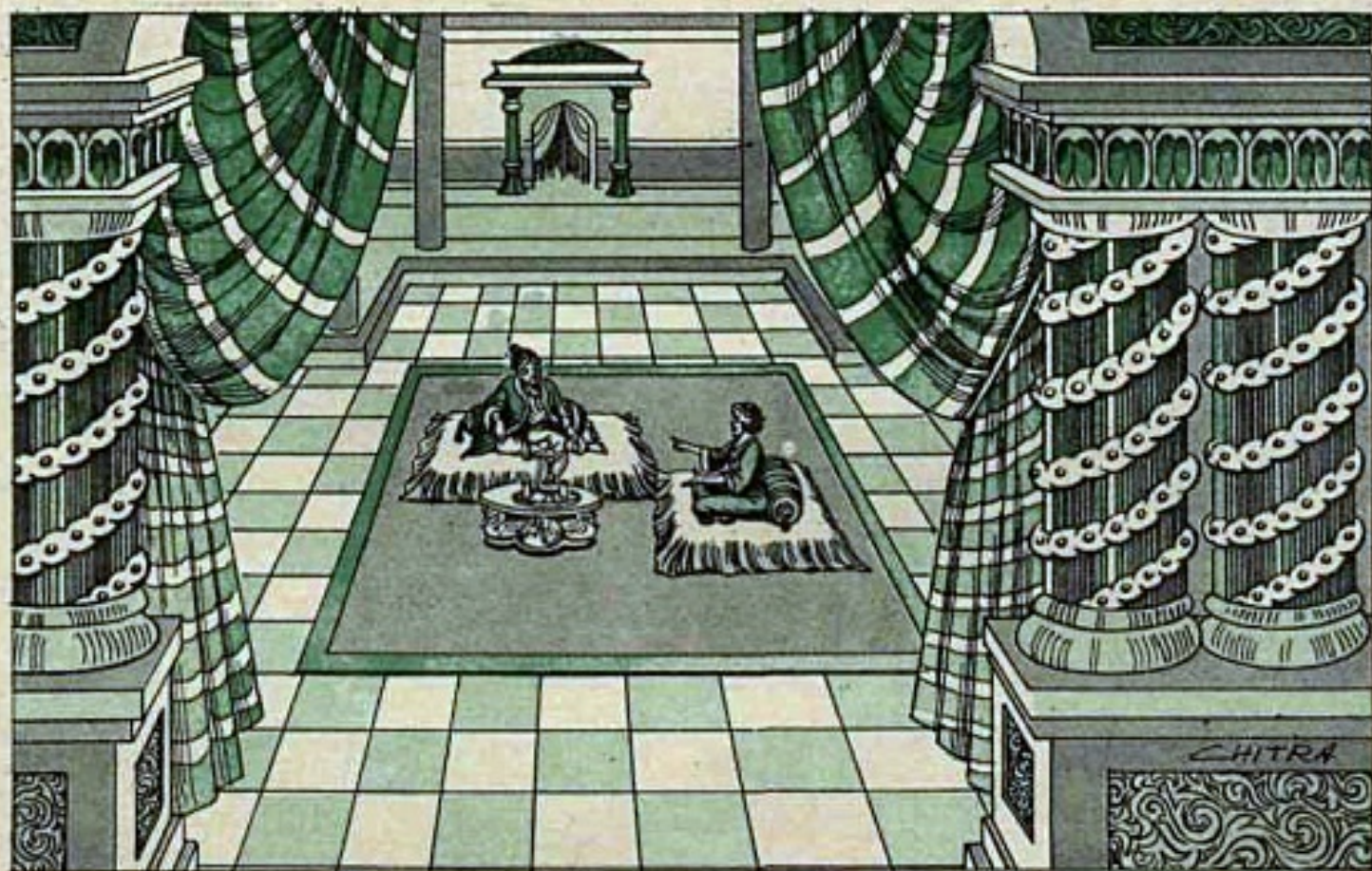
"मैं क़सम खाकर कहता हूँ कि तुम्हारी ये बातें किसी दूसरे के सामने प्रकट न करूँगा।" खलीफ़ा ने कहा। लेकिन तब तक खलीफ़ा ने अपने मन में निश्चय कर लिया था कि इस मौक़े का फ़ायदा उठा कर एक अच्छा प्रहसन प्रस्तुत किया जाय। वह कई बार वेश बदल कर अपने राज्य में घूम चुका है, मगर कभी उसे ऐसा अवसर प्राप्त नहीं हुआ।

इसके बाद खलीफ़ा ने हसन के हाथ से शराब की बोतल लेकर कहा–"गिलासों को मुझे भरने दो।" इन शब्दों के साथ खलीफ़ा ने गिलासों में शराब भर दी और हसन की आँख बचा कर एक गिलास में नशीली दवा डाल दी।

हसन अपने अतिथि के हाथ से शराब भरा गिलास लेते हुए बोला–"मैं अभी बताये देता हूँ कि सवेरे आपके जाते समय तक शायद मैं नींद से जाग नहीं सकता। इसलिए आप चलते समय मेहर्बानी करके किवाड़ बन्द करना न भूलियेगा।"

खलीफ़ा ने मान लिया, तब बेफ़िक्र हो हसन शराब पीकर लोटते हुए बिस्तर पर जा गिरा। इस दृश्य को देख खलीफ़ा अपनी हँसी को रोक न पाया।

इसके बाद खलीफ़ा ने अपने गुलाम को बुला कर कहा–"तुम इस आदमी को उठा कर मेरे साथ चलो। साथ ही तुम इस घर का हुलिया याद रखो, अगर मैं तुम्हें फिर भेज दूँ तो तुम्हें इस घर में आना होगा।"

वे दोनों घर से चल पड़े, मगर किवाड़ बन्द करना भूल गये। गुप्त मार्ग से दोनों

राजमहल में पहुँचे और खलीफ़ा के कमरे में आये।

"इस आदमी की सारी पोशाकें खोल दो, रात में पहनी जानेवाली मेरी पोशाकें इसे पहना कर मेरे बिस्तर पर लिटा दो!" खलीफ़ा ने आदेश दिया।

इसके बाद खलीफ़ा ने राजमहल के कर्मचारियों, वजीरों, पहरेदारों और अंत:पुर की स्त्रियों को भी बुला भेजा।

सबके आने पर खलीफ़ा ने उनसे कहा—"कल सुबह तुम सब इस कमरे में आ जाओ और इस व्यक्ति के आदेशों का पालन करो। मेरे साथ तुम लोग-जैसा व्यवहार करते हो, वही व्यवहार इस आदमी के साथ करो। इसी व्यक्ति को मुझे मानो। मेरे साथ जैसा संबोधन करते हो, वैसा ही संबोधन इसके साथ करो, चाहे इसकी इच्छा छोटी सी भी क्यों न हो, संकोच किये बिना उसकी पूर्ति करो। इसका अतिक्रमण करने पर चाहे वह मेरा पुत्र भी क्यों न हो, मैं क़िले के दर्वाज़े पर उसे फाँसी के तख्ते पर चढ़ाऊँगा।" सब लोग खलीफ़ा से अनुमति लेकर चले गये, मगर बज़ीर जफ़र तथा वेत्रहस्त मनशूर वहीं रह गये।

खलीफ़ा ने उनसे कहा—"तुम दोनों सबसे पहले नींद से जाग कर आओ, इसके आदेशों का पालन करो। यह जो भी कहे, अचरज़ में मत आओ। चाहे यह स्वीकार भी न करें कि वह खलीफ़ा है, फिर भी तुम लोग ऐसा अभिनय करो कि तुम इसीको खलीफ़ा मानते हो। वह जिसका नाम ले, उन सबको दान-दक्षिणा दो। खज़ाना भले ही खाली हो जाय, संकोच मत करो। उसके आदेशों के अनुसार ही दण्ड, पुरस्कार, फाँसी की सज़ा, नौकरियाँ देना व नौकरियों से हटाना इत्यादि काम अमल करो। मगर यह बात उसे मालूम न होने दे कि यह सब मेरे मनोरंजन के लिए इंतज़ाम किया गया है। तुम लोग नींद से जागते ही मुझे भी जगा दो।

(और है)

ब्रह्मचारी शत मर्कट:

कृष्णानदी के किनारे एक डोंगी थी। एक दिन नदी पार करने के लिए डोंगी पर एक झाड़ू बेचनेवाली, एक बंदरिया और एक संपेरा सवार हुए।

डोंगी जब चलने को हुई तब एक ब्रह्मचारी कहीं से चिल्लाता हुआ आ पहुँचा–"ठहर जाओ!" "ठहरो"।

डोंगी पर सवार हुए लोगों ने डोंगीवाले से बताया कि ब्रह्मचारी को डोंगी पर सवार मत होने दो, तुम मत ठहरो! जल्दी आगे बढ़ो! मगर डोंगीवाले ने ब्रह्मचारी को डोंगी पर बिठाया।

डोंगी जब मंझधार में सरकती जा रही थी, तब ब्रह्मचारी ने झाड़ू में से एक तीली निकाल कर बंदर के कान में घुमेड़ दिया। बन्दर ने उछल कर संपेरे की टोकरी पर लात मारी, तब उसमें से दो नाग फुफकारते बाहर आये। नागों से डरकर औरत और ब्रह्मचारी पानी में कूद पड़े। उन्हें बचाने में डोंगीवाले की जान आफ़त में आ गयी। तब उसने सोचा कि ब्रह्मचारी शत मर्कट के समान है।
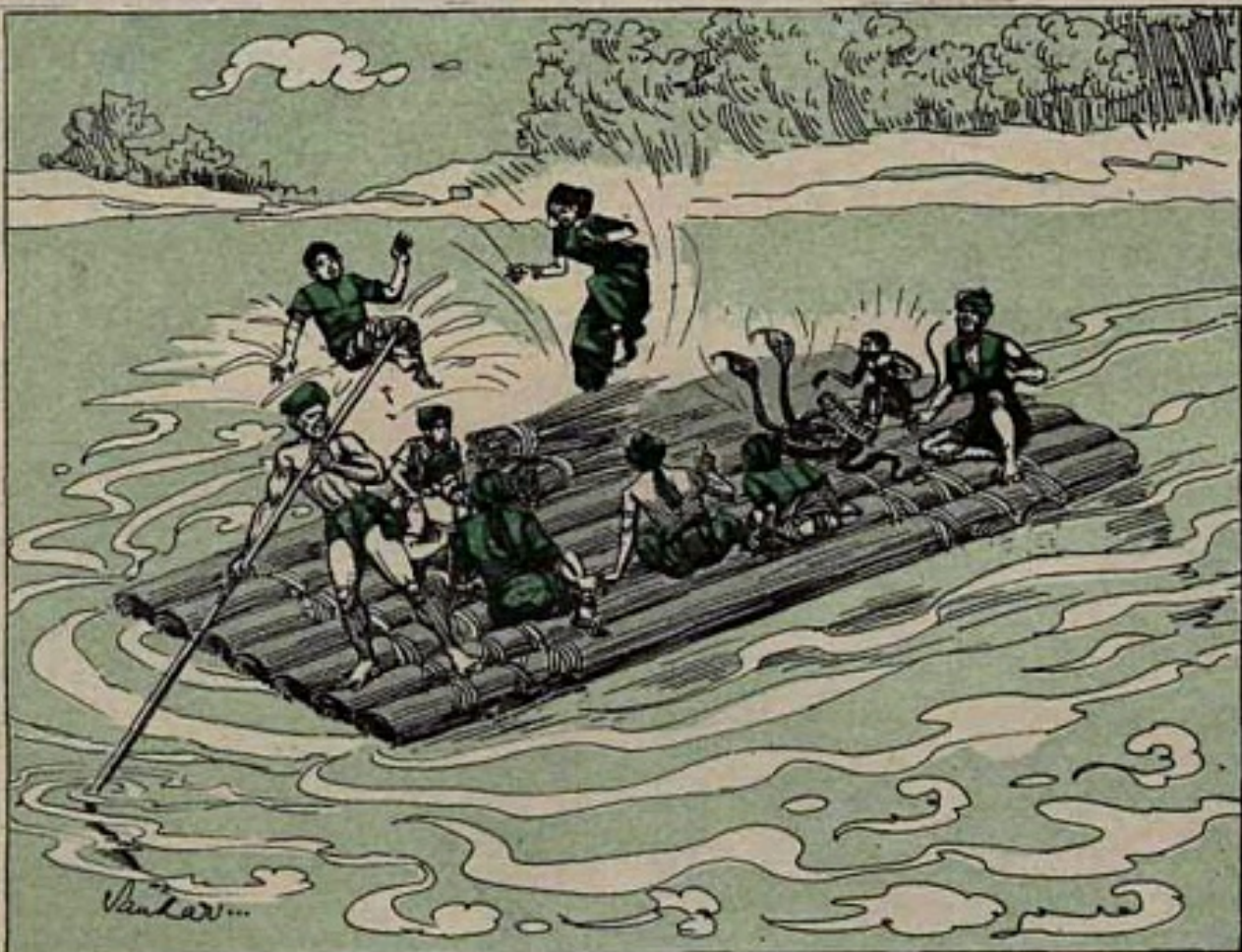
आदत की बात

एक गाँव में गुरुनाथ नामक एक किसान था, वह खेत का काम तो करता ही था, लेकिन फ़ुरसत के वक़्त व्यापार भी किया करता था। गुरुनाथ के रामनाथ और शंकरदास नामक दो बेटे थे। रामनाथ खेत के कामों में अपने पिता की मदद किया करता था, छोटा शंकरदास दूकान का काम देखता था। अपने बेटों के बड़ो होने पर गुरुनाथ ने दोनों की शादी की। दोनों बहू ससुराल में भी आ गयीं, मगर वे हर छोटी सी बात पर झगड़ा करती थीं।

एक दिन रामनाथ की पत्नी शंकरदास की पत्नी से बोली–"मेरे पति तो सवेरे उठकर शाम तक खेत का काम करते हैं। फ़सल पैदा करते हैं जिससे हमारी गृहस्थी चलती है। लेकिन तुम्हारा पति आराम से दूकान पर बैठ जाता है, यह काम तो कोई भी कर सकता हैं।"

अपने पति के बारे में यह हल्की धारणा देख छोटी बहू सहन कर नहीं पायी, वह आवेश में आकर बोली–"दूकान के काम में तो मगजपच्ची करनी होगी। हिसाब लगाना होगा। समझी! तुम्हारे पति तो हिसाब-किताब क्या जाने? इसलिए तो बैल की तरह खेत का काम करता है।"

उस दिन रात को दोनों बहुओं ने अपने पतियों से सुबह के झगड़े के बारे में नामक-मिर्च लगाकर कह सुनायीं। इस पर दोनों भाइयों का पौरुष जाग उठा।

दूसरे दिन रामनाथ शंकरदास से बोला–"अरे, मैंने सुना कि कल तुम्हारी औरत ने मेरे काम का मजाक़ उड़ाया है, उसे जरा डांट-डपटकर समझा दो।"

"मैंने भी सुना है, उसने तो कुछ नहीं कहा, भाभी ने ही अंट-संट कुछ कह दिया है।" छोटे भाई ने उत्तर दिया।

दीनानाथ चौबे

"हां, तुम्हारी भाभी ने क्या कहा? जो बात है, वही कह दी है।" बड़े भाई ने अपनी पत्नी का समर्थन किया।

शंकरदास ने भी अपनी पत्नी की बातों का समर्थन किया। इस पर बात बढ़ी और झगड़ा शुरू हो गया।

गुरुनाथ ने जब अपने पुत्रों को झगड़ते देखा तो उन्हें निकट बुला कर पूछा—"बेटे, झगड़ते क्यों हो? बात क्या है?"

"पिताजी! आपने तो छोटे भाई को आराम से दूकान पर बैठने का काम सौंपा, मुझे तो जी तोड़ मेहनत करने का काम दिया। मैं आइंदा यह काम नहीं कर सकता।" रामनाथ ने कहा।

"शंकरदास, तुम्हारा क्या विचार है?" गुरुनाथ ने अपने छोटे पुत्र से पूछा।

"बड़े भाई को साल भर में सिर्फ़ चार महीने खेत का काम रहता है, मुझे तो साल भर दूकान का काम देखना पड़ता है, मैं भी यह काम नहीं कर सकता।" शंकरदास ने कहा।

गुरुनाथ थोड़ी देर सोचता रहा तब बोला—"रामनाथ, आज से तुम खेत का काम छोड़ कर दूकान पर बैठ जाओ, शंकरदास, तुम खेत का काम करो।"

रामनाथ दूकान पर जा बैठा, पर वह हिसाब-किताब नहीं जानता था, इसलिए उसे दूकान का काम मुश्किल-सा लगा। शंकरदास खेत में तो गया, थोड़ी देर तक काम करते ही वह थक गया, शाम तक दोनों ने ऐसा अनुभव किया, मानों वे नरक में हैं।

शाम को घर लौटते ही शंकरदास ने अपने पिता से कहा—"पिताजी, कल से मैं दूकान का ही काम देखूंगा।" इसी तरह रामनाथ ने भी खेत का काम करने की इच्छा प्रकट की।

उस रात को दोनों बहुओं ने अपने पतियों की अवहेलना की—"छी! छी! फिर वही पुराना काम करने की बात करते हो!" मगर दोनों भाइयों ने अपनी पत्नियों को डांट बतायी और दूसरे दिन से वे अपने पुराने काम ही करने लगे।

बल का प्रदर्शन

चौथ नामक टीले के पास के एक गाँव में एक दिन एक पहलवान आया। उसने वहाँ पर अपने बल का प्रदर्शन किया। चौपाल के पास उसने एक बड़ा पत्थर उठा कर गाँववालों को आश्चर्य में डाल दिया।

गाँववाले सब उस पहलवान की तारीफ़ कर ही रहे थे, तब एक व्यक्ति ने उठकर कहा–"आप लोग इस पहलवान की तरीफ़ ही क्यों करते हैं? यह तो मांस खाकर, दूध पीकर खूब मोटा-ताजा बन गया है। मुझे भी अगर कोई छे महीने भर मांस, अंडे तथा दूध दे तो मैं चौथ टीले को ही ढो सकता हूँ।"

गाँववालों ने उसकी बातों पर विश्वास किया और छे महीने तक बारी-बारी से उसे खूब खिलाया और पिलाया। एक दिन सबने उससे पूछा–"अच्छा, अब देखे! टीले को उठाओ!"

"मैंने टीले को उठाने की बात नहीं कही, ढोने की बात बतायी। आप लोग उस टीले को उठाकर मेरे कंधों पर रखिये। तब मैं न ढोऊँ तो पूछना।" धूर्त ने जवाब दिया।
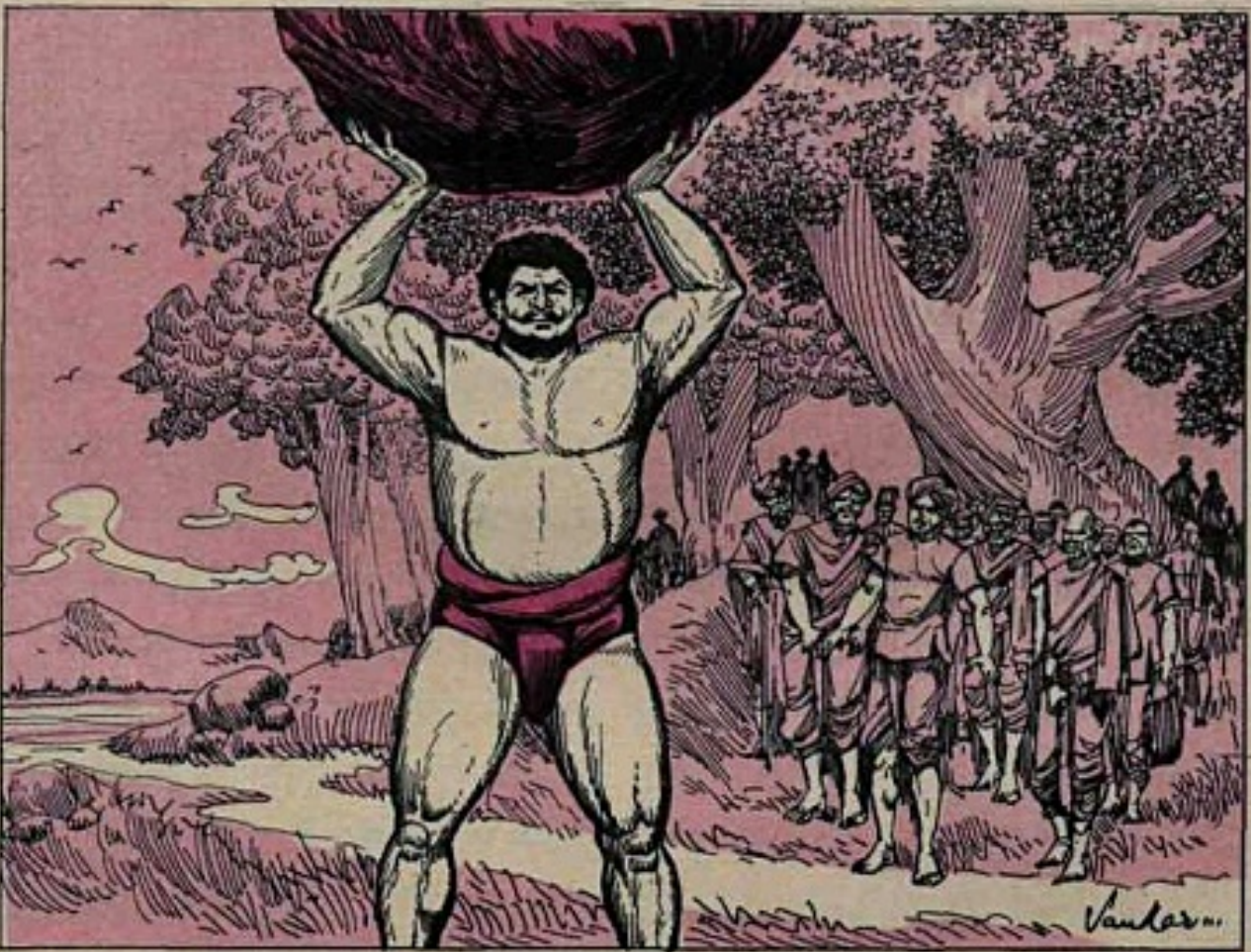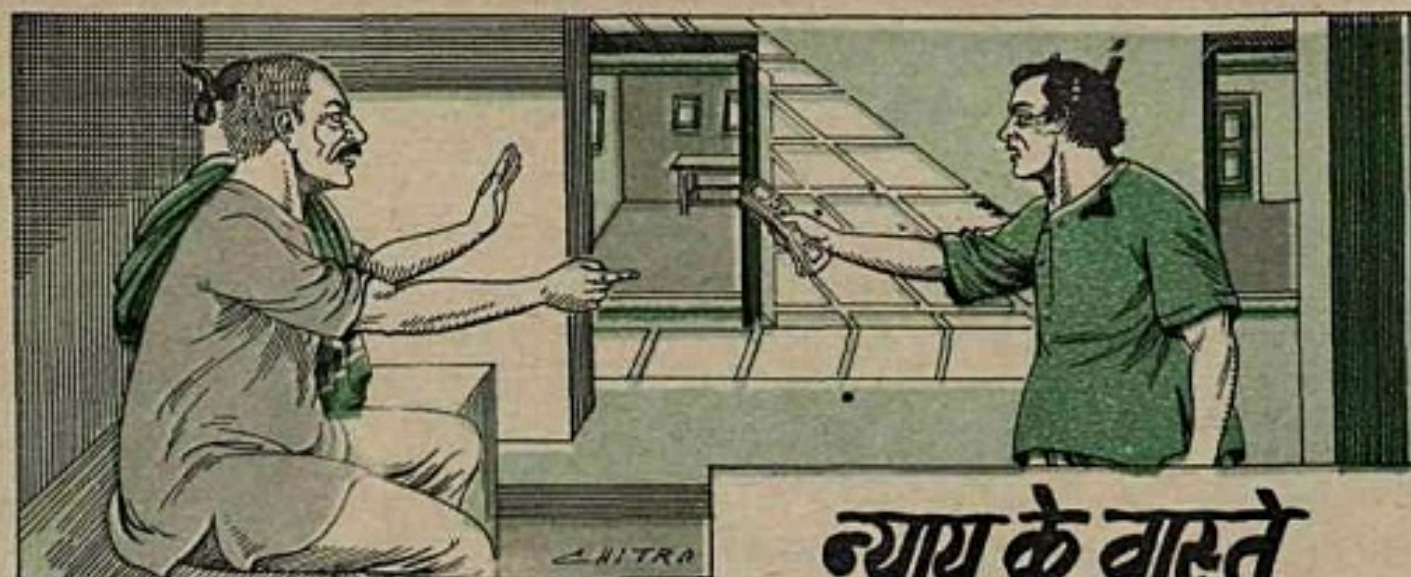
न्याय के वास्ते

एक गाँव में रामकृपाल नामक एक अमीर था। वह सूद का व्यापार करता था। वह वैसे ज्यादा ब्याज तो वसूल नहीं करता था, मगर जो आदमी सोने के गहने गिरवी रखता, उसे ही उधार देता और रुपये चुकाने की मोहलत निश्चित करता। यदि मोहलत के भीतर उधार नहीं चुकाते, तो गिरवी के गहने उसकी पत्नी के शरीर पर हमेशा के लिए रह जाते।

उसी गाँव के एक गृहस्थ को रुपयों की ज़रूरत आ पड़ी। उसने रामकृपाल के यहाँ हीरों का हार गिरवी रखकर दो हज़ार रुपये उधार में लिया। मगर उधार की रक़म चुकाने की मोहलत के अन्दर वह गृहस्थ अचानक मर गया। उसके बेटे ने सत्रह-अट्ठारह सौ रुपये तक चुकाये, लेकिन मोहलत के दिन तक मूल धन तथा ब्याज की रक़म कुल चार-पांच सौ रुपये चुकाने बाक़ी रह गये। मोहलत के बीतने के कुछ दिन बाद उस युवक ने रुपये लाकर रामकृपाल के हाथ दे अपने हीरों का हार मांगा।

"मोहलत तो बीत गयी, अब मैं हार वापस न दूंगा।" रामकृपाल ने कहा।

दो हज़ार रुपये का क़ीमती हार हाथ से निकलता जा रहा था, इसलिए उस युवक को बड़ा क्रोध आया। उसने गाँव के मुखिये के पास जाकर शिकायत की, इस पर मुखिये ने उत्तर दिया–"मैं क्या कर सकता हूँ? तुम्हारे पिता ने इकरारनामा लिखकर दिया है। रामकृपाल के घर सेंध लगाने के सिवाय तुम्हारे हार को प्राप्त करने का कोई उपाय नहीं है।"

यह बात तो मुखिये ने हँसी-मज़ाक में बतायी थी, पर हार को चुराने की बात युवक के दिमाग में बैठ गयी। मौक़े की

शीला राम

ताक में वह युवक उस घर के चारों तरफ़ मंडराने लगा।

एक दिन सवेरे जब रामकृपाल उधार की रक़म वसूल करने के लिए बस्ती में जाने लगा, तो उसकी पत्नी ने कहा– "अजी, हीरे के हार में से एक हीरा ढीला हो गया है, उसे ठीक से बिठाना है।"

"मैं बस्ती से सुनार चरणदास को भेज दूंगा।" ये शब्द कहते रामकृपाल चल पड़ा।

ये बातें युवक ने सुन लीं। उसने घर जाकर अपने एक मित्र को बुला भेजा, उसे गुप्त रूप से समझा-बुझा कर दो घंटे बाद रामकृपाल के घर भेज दिया।

उस आदमी ने सीधे रामकृपाल के घर जाकर दर्वाजे पर दस्तक दी। रामकृपाल की पत्नी ने दर्वाजा खोलकर पूछा–"तुम कौन हो? किसलिए आये हो?"

"माई, मैं तो सुनार चरणदास हूँ। मालिक ने मुझे बस्ती से भेजा है। वे कह रहे थे कि हार का एक हीरा ठीक से बिठाना है।" आगंतुक ने कहा।

"हाँ, हाँ, मैं भूल ही गयी। क्या हार दे दूं?" रामकृपाल की पत्नी ने पूछा।

"दे दो, माई! आध घड़ी में ठीक से बिठा कर ला दूंगा।" ये शब्द कहकर हीरों का हार ले वह व्यक्ति चला गगा।

फिर क्या था, वह हार गृहस्थ के पुत्र के हाथों में आ गया।

शाम को रामकृपाल के घर लौटते ही उसकी पत्नी बोली–"वाह, आपने भी
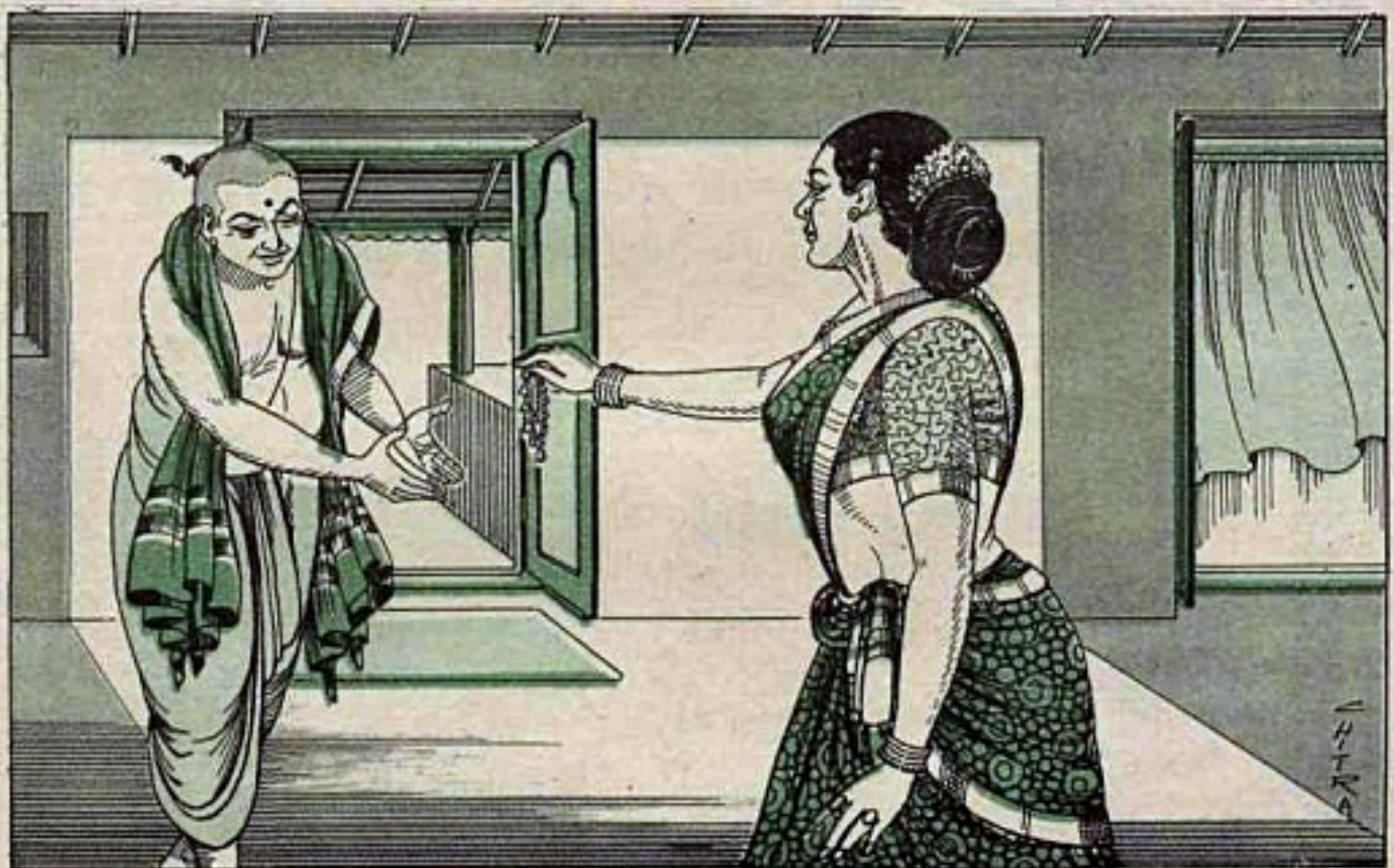
कैसे सुनार को भेजा? सुनार चरणदास मुझसे यह कहकर हार ले गया कि आध घड़ी में हीरा ठीक से बिठाकर ला दूँगा, लेकिन वह अभी तक नहीं आया। न मालूम वह कब पूरा करके ला देगा?"

"हीरों का हार! अरी काम की जल्दी में मैं यह बात ही भूल गया। मैंने तो किसी सुनार को घर नहीं भेजा?" रामकृपाल ने घबड़ाये हुए स्वर में कहा।

तब उन्हें असली बात मालूम हो गयी, लगा कि मानों उनके पैरों के नीचे से धरती खिसकती जा रही है।

यह साफ़ मालूम हो गया कि किसी कमबख्त चोर ने हार को हड़प लिया है।

रामकृपाल तुरंत मुखिये के पास गया और चोरी का समाचार देकर कहा—"साहब, आप अभी ढिंढोरा पिटवा दिजिये। जो मुझे अपने हीरों का हार लौटायेगा या दिला देगा, उसे मैं चार सौ रुपये पुरस्कार दूँगा।"

"रामकृपाल जी! कर्ज की रक़म से चार-पांच सौ बाकी रह गया तो आपने उस हार को अपना लिया। अब यह ढिंढोरा पिटवा दे तो लोग आपके बारे में क्या सोचेंगे? हार की चोरी हो गयी तो उसके मालिक को रोना है, आपको नहीं, समझें!" मुखिये ने सलाह दी।

रामकृपाल ये बातें सुनकर लजा गया और चुपचाप अपने घर लौट गया।

थोड़ी देर बाद गृहस्थ के पुत्र ने आकर रामकृपाल से कहा—"साहब, लीजिये आपके ये चार सौ रुपये। हार की चोरी करनेवाला मेरे हाथ में आ गया। मेरा हार तो मुझे वापस मिल गया। मैं इस बात की रसीद दे देता हूँ कि मेरा हार मुझे मिल गया है, लीजिये।"

लाचार होकर रामकृपाल ने उस युवक को यह लिख कर रसीद दी कि उसकी पूरी रक़म मिल गयी है और युवक से रसीद ली कि उसे भी उसका हार वापस मिल गया है।

बुरी लत

एक गाँव में एक दगाबाज था। वह हमेशा दूसरों से उधार लेकर कस कर खाया करता था। एक बार कोई उसके धोखे का शिकार हो जाता, वह दूसरी बार उसे कर्ज न देता। लेकिन नये लोग उसकी बातों में आकर उसे कर्ज दिया करते थे। लेकिन जब उसने प्रायः सभी गाँववालों को दगा दिया, सबने मिलकर राजा से उसके बारे में शिकायत की।

राजा ने सारी बातें सुनकर उसे अच्छा सबक सिखाना चाहा. इसलिए अपने नौकरों को आदेश दिया–"तुम लोग इस आदमी को ले जाओ, बीच रास्ते में खड़ा कर इसकी पीठ पर भारी चट्टान रख दो।" राजा की आज्ञा का नौकरों ने पालन किया।

उसी समय किसी दूर देश से एक व्यापारी हाथियों को बेचने के लिए उस रास्ते से गुजरा। चट्टान ढोनेवाले ने व्यापारी से पूछा–"क्या ये हाथी बेचने के हैं?"

व्यापारी ने जवाब दिया–"हाँ, हाँ, बेचने के लिए ही तो लाया हूँ।"

"तब तो दो हाथियों को उधार में दे जाओ।" चट्टान ढोनेवाले ने कहा।

ये बातें सुनकर राजा ने नौकरों से कहा–"यह तो इसकी बुरी लत है। चाहे इसे जैसे भी दण्ड दे, यह लत नहीं छूटेगी. इसलिए इसे छोड़ दो।"

गणपति भट्ट

एक गाँव में गणपतिभट्ट नामक एक भाट था। उसका पेशा था, धनियों की प्रशंसा करके इनाम पाना और उसीसे अपना पेट भरने का। इस पेशे में वह माहिर था। वह आशुकविता के लिए बहुत ही मशहूर था।

उसी गाँव में एक जमीन्दार था। जमीन्दार के घर जो भी मंगल कार्य होता तो गणपतिभट्ट अवश्य हाज़िर होता और जमीन्दार तथा उसके वंश पर स्त्रोत्र पाठ करता। मगर जमीन्दार बड़ा कंजूस और मक्खीचूस था। इसलिए वह गणपतिभट्ट के हाथ में छुट्टे पैसे रख देता और कहता कि कभी भविष्य में होनेवाले मांगलिक कार्य के अवसर उसे बढ़िया इनाम दिया जायगा।

जमीन्दार के मुंह से हर बार ये ही बातें सुनकर भाट ऊब तो गया, लेकिन वह उस जमीन्दार को छोड़ दूसरी जगह नहीं गया, और न दूसरे जमीन्दार की शरण ही ली।

उसके मन के किसी कोने में यह आशा बनी रही कि कभी न कभी यह जमीन्दार उसे बढ़िया पुरस्कार देगा। इसलिए वह उसी गाँव में रह गया।

भट्ट के मन में कई दिनों से एक दुधारू गाय पाने की इच्छा थी। उसके घर के लोग दूध और दही के वास्ते लालाइत रहते थे। इसलिए भट्ट जमीन्दार के द्वारा यह गाय पाना चाहता था।

उन्हीं दिनों में जमीन्दार के बड़े पुत्र का विवाह तै हुआ। विवाह बड़े ही ठाठ-बाट से मनाया जा रहा था। दूर-दूर के गाँवों से बड़े-बड़े धनी लोग आ गये थे। गणपतिभट्ट भी उस विवाह में हाज़िर हुआ। उसने वर-वधू को आशीर्वाद देते

सुधाकर पांडे

हुए सुंदर कविताएँ पढ़ सुनायीं। उन कविताओं में जमीन्दार के गुण और यश का गान किया गया था। उपस्थित लोगों ने उन कविताओं की बड़ी प्रशंसा की।

जमीन्दार को लगा कि इस बार गणपतिभट्ट को बढ़िया पुरस्कार देना ही पड़ेगा। तब उसने गणपतिभट्ट से पूछा– "मैं तुम्हें पुरस्कार देना चाहता हूँ, वह किस रूप में दूं?"

"सरकार! मुझे एक दुधारू गाय दे दीजिये।" गणपतिभट्ट ने जवाब दिया।

"अच्छी बात है!" ये शब्द कहकर जमीन्दार ने अपने एक नौकर को बुलाकर उसके कान में कुछ कहा। नौकर चला गया और थोड़ी देर बाद एक गाय को लाकर दूर पर खड़ा कर दिया।

उस गाय को देखते ही गणपतिभट्ट बड़ा ही निराश हुआ। वह बूढ़ी गाय थी, अब न उसके बछड़े देने की संभावना थी और न दूध ही दे सकती थी। उल्टे चारे का नुक़सान भरना पड़ेगा।

मगर गणपतिभट्ट उन सब लोगों के बीच यह कैसे कह सकता था कि वह गाय किसी काम की नहीं है। उसे स्वीकार करने की उसकी बिलकुल इच्छा न थी। उसे लेने से इनकार करने के लिए उसने एक अच्छा उपाय किया। वह गाय के पास चला गया और इस तरह अभिनय किया, मानों वह उसके कान में कुछ कह

रहा हो और उसकी बातें सुन रहा हो। भट्ट के इस काम को देख वहाँ पर उपस्थित सभी लोग विस्मय में आ गये।

"गणपतिभट्ट! यह तुम क्या कर रहे हो?" जमीन्दार ने पूछा।

गणपति ने विनयपूर्वक हाथ बांध लिये और जमीन्दार के सामने जाकर खड़े हो बोला—"सरकार! मैंने गाय से एक सवाल पूछा, उसने मेरे सवाल का जवाब दिया।"

"तुमने गाय से क्या पूछा? और उसने क्या जवाब दिया?" जमीन्दार ने भट्ट से पूछा।

भट्ट ने यों जवाब दिया—"सरकार, मैंने गाय से पूछा कि क्या तुम बछड़े दे सकती हो? इस पर उसने कहा—'कृत युग में मैं महिषासुर की पत्नी थी, लेकिन आदि शक्ति ने मेरे पति का वध किया। पर मैं नहीं मरी। इसके बाद त्रेता युग आया। मनुष्य सब बदल गये, पशु-पक्षी भी बदल गये। पर मैं नहीं बदली। मैंने रावण का जन्म लेना और मरना भी अपनी आँखों से देख लिया है। मुझे इस ज़िंदगी से विरक्ति पैदा हुई। इसके बाद द्वापर युग आया, उस वक़्त भी मैं इसी रूप में थी। कंस का पैदा होना और मरना भी मैंने इन आँखों से देखा। दुनिया के प्रति मेरे मन में विरक्ति पैदा हुई। अब कलियुग भी आ गया है। मैं सभी प्रकार के बंधन तोड़ कर मुक्त हूँ। मेरी इस अवस्था में तुम मुझसे पूछते हो कि क्या तुम बछड़े दे सकती हो? ये सवाल पूछने में तुम्हें लज्जा नहीं आयी?' यही उत्तर गाय ने दिया है, सरकार।"

भट्ट की बातें सुनकर सब ठहाके मार कर हँस पड़े। सब पर यह बात प्रकट हो गयी कि जमीन्दार ने गणपति भट्ट को कैसी गाय दी है? जमीन्दार ने भांप लिया कि अब उसकी रही सही प्रतिष्ठा भी जाती रहेगी, इस पर उसने गाय लाने वाले नौकर को डांट बतायी और एक अच्छी दुधारू गाय को मंगवा कर गणपतिभट्ट को इनाम में दिया।

महाभारत

सभाभवन में भीष्म तथा कृपाचार्य ने दुर्योधन को उपदेश दिया, तदुपरांत त्रिगर्तराजा तथा कौरव राज्य की रथ-सेना के नेता सुशर्मा ने उठ कर यों कहा:

"मत्स्यदेश के राजा ने अनेक बार मेरे राज्य पर हमला किया है। उसका अत्यंत बलवान सेनापति गंधर्वों के हाथों में मर गया है। इस वक़्त मत्स्यदेश का कोई योग्य सेनापति नहीं है। यदि आप चाहेंगे तो हम लोग उस देश पर हमला कर बैठेंगे। हम लोग पर्याप्त धन, रत्न तथा गायों को लूट सकते हैं।"

सुशर्मा के कथन का कर्ण ने समर्थन किया। इस पर दुर्योधन ने अपने छोटे भाई दुश्शासन से कहा—"भैया, तुम सेना को तैयार करो। सुशर्मा त्रिगर्त की सेनाओं के साथ मत्स्यदेश पर हमला करके गायों की रेवड़ को पकड़ लेंगे। दूसरे दिन हम एक दूसरी दिशा से हमला करेंगे।"

इस योजना के अनुसार कृष्णा सप्तमी के दिन सुशर्मा अपनी सेनाओं को लेकर चल पड़ा। अष्टमी के दिन कौरव-सेनाएँ निकल पड़ीं। इस बीच अज्ञातवास की अवधि पूरी हो गयी। कीचक की मृत्यु के बाद विराट असहाय हो गया था।

उधर सुशर्मा की सेनाओं ने विराट की गायों की रेवड़ों को पकड़ लिया। विराट को समाचार मिला कि लाखों की संख्या में त्रिगर्त की सेनाओं ने आकर गायों को

४१. गोग्रहण

अपने अधीन कर लिया है, इसलिए उनका सामना करके गायों को छुड़ावे ।

राजा विराट ने तत्काल अपनी सेनाओं को तैयार किया और अपने छोटे भाई शतानीक, मदिराक्ष इत्यादि के साथ युद्ध के लिए सन्नद्ध हो गया । विराट ने यह भी सोचा कि अपने यहाँ रहनेवाले युधिष्ठिर, भीम, तथा नकुल और सहदेव युद्ध-विद्या जानते होंगे, इस ख्याल से उनके लिए भी रथ तैयार करवाये ।

विराट की सेनाएँ जब त्रिगर्त की सेनाओं के साथ जूझ पड़ी, तब तक तीसरा पहर हो चुका था । दोनों दलों के बीच जब भयंकर युद्ध छिड़ा, तब तक संध्या हो चली । उस वक़्त सुशर्मा ने विराट के साथ युद्ध करके उसे बन्दी बनाया, विराट की सेना तितर-बितर हो गयी ।

उस समय युधिष्ठिर ने भीम को सलाह दी कि वह राजा विराट को छुड़ा लावे और इस बात का शत्रु को पता न चले कि वह भीम है । भीम ने सुशर्मा का सामना किया । युद्ध में उसे पराजित कर बन्दी बनाया और राजा विराट को मुक्त किया । बन्दी सुशर्मा को युधिष्ठिर ने मुक्त किया ।

राजा विराट ने अपनी राजधानी को यह समाचार भेजा कि वह विजयी हो गया है, तब अपनी गायों की रेवड़ों को वापस ले जाने लगा । तभी दुर्योधन ने एक विशाल सेना के साथ भीष्म, द्रोण, कर्ण, शकुनि, दुश्शासन, अश्वत्थामा इत्यादि महान वीरों को साथ ले एक दूसरी ओर से मत्स्यदेश पर हमला किया और गायों की रेवड़ों को पकड़ लिया ।

चारावाहों ने यह समाचार देने के लिए विराटनगर की ओर अपना रथ दौड़ाया और भूमिंजय नामक राजकुमार को देख कहा—"राजकुमार, कौरवों ने हमारी छे हज़ार गायों को पकड़ लिया है । हमारे राजा कहा करते हैं कि आप महावीर हैं । आप युद्ध भूमि में आकर हमारी गायों को छुड़ा लीजिये । कौरव-सेनाओं का सर्वनाश कीजिये ।"

यह समाचार जब उत्तर नामक राजकुमार भूमिजय को दिया गया, तब वह स्त्रियों के बीच बैठा हुवा था। इसलिए उसने मन में सोचा कि वह सचमुच एक महावीर है, तब कहा–"मैं हमारी गायों को आसानी से शत्रु के हाथों से छुड़ा सकता हूँ, लेकिन दुख की बात है कि युद्ध के रहस्य जाननेवाला सारथी हमारे यहाँ कोई नहीं है। तुम लोग एक अच्छे सारथी को खोज़कर ले आओ।"

उत्तर के पास जो अनेक स्त्रियाँ थीं, उनके बीच बृहन्नला के रूप में अर्जुन भी वहीं था। उसने हिसाब लगाकर जान लिया कि पांडवों के अज्ञातवास की अवधि समाप्त हो गयी है, तब उसने गुप्त रूप से द्रौपदी से कहा–"तुम राजकुमार उत्तर से कह दो कि मैं एक समय अर्जुन का सारथी रहकर उनकी प्रशंसा प्राप्त कर चुका हूँ और यह भी कहो कि वह मुझे अपना सारथी बना ले।"

द्रौपदी ने लजाते हुए उत्तर के पास जाकर यह समाचार दिया। पहले उत्तर ने संदेह किया कि बृहन्नला तो नपुंसक है, लेकिन द्रौपदी के ज़ोर देने पर बृहन्नला को अपना सारथी बनाने की स्वीकृति दी। उत्तर की इच्छा पर उसकी बहन उत्तरा ने बृहन्नला से निवेदन किया कि वह उसके भाई का सारथी बने।

आखिर कौरव योद्धाओं के साथ युद्ध करने के लिए उत्तर राजी हो गया और अर्जुन ने उसके सारथी बनने की सम्मति दी। इस पर राजकुमारी उत्तरा तथा उसकी सखियों ने बृहन्नला से कहा–"आप भीष्म और द्रोणाचार्य को पराजित करके हमारी गुडियों को सजाने के लिए रंग-बिरंगी मुलायम बस्त्र लेते आइये।"

इस पर अर्जुन ने हंसते हुए उत्तर दिया–"उत्तर की विजय होगी, तो मैं अवश्य ले आऊँगा।"

इसके बाद उत्तर और बृहन्नला रथ पर सवार हुए। रथ तेजी से नगर को पारकर

गया। तब उत्तर ने अर्जुन से कहा– "बृहन्नला, रथ को कौरव सेनाओं की दिशा में ले चलो। हमें शीघ्र कौरव सेना को पराजित कर गायों को वापस ले आना है।"

अर्जुन ने तेजी से रथ को हांका। वे जब श्मशान के बीच में स्थित शमीवृक्ष के पास पहुँचे तब उन्हें महा समुद्र की भांति विशाल कौरव सेना दिखाई दी। उस सेना के संचालन से धूल उठकर सारे आकाश में व्याप्त हो गयी थी। उस दृश्य को देख राजकुमार उत्तर घबरा गया।

"बाप रे बाप! इस सेना को मैं कैसे जीत सकता हूँ? देवता भी इसे जीत नहीं पायेंगे, मेरे पिताजी सारी सेना के साथ त्रिगर्तों को पराजित करने चले गये हैं, इसलिए राजधानी में मैं अकेला ही रह गया। क्या मैं भीष्म, द्रोणाचार्य तथा अनेक योद्धाओं का अकेले ही सामना कर सकता हूँ? बृहन्नला, रथ को वापस मोड़ लो।" राजकुमार उत्तर चिल्लाने लगा।

"राजकुमार, डरो मत! तुम्हें देख शत्रु योद्धा हँस पड़ेंगे। उनके साथ युद्ध करो। तुमने नारियों के समक्ष शत्रु को पराजित करने की डींग मारी। मैं रथ को शत्रुओं के बीच हांक देता हूँ। उन्हें पराजित किये बिना मैं राजधानी को लौट नहीं सकता।" अर्जुन ने समझाया।

"चाहे कौरव हमारी गायों को हांक ले जाने दो! चाहे अंत:पुर की स्त्रियाँ मुझ पर हँस लेने दो, थूकने दो। लेकिन मैं युद्ध नहीं कर सकता।" ये शब्द कहते राजकुमार उत्तर ने धनुष और बाण फेंक दिये और रथ से कूदकर नगर की ओर दौड़ने लगा।

"क्षत्रियों को युद्ध में मरना पड़े तो मरने के लिए तैयार होना चाहिए, लेकिन शत्रु को पीठ दिखाना नहीं चाहिए।" इन शब्दों के साथ अर्जुन रथ से उतर पड़ा और उत्तर का पीछा करने लगा। बृहन्नला की आकृति को देख कौरवों ने यह नहीं सोचा कि वही अर्जुन है और वे ठठाकर हँसने लगे।

इस बीच अर्जुन ने उत्तर को पकड़ लिया, उसके रोते-कलपते रहने पर भी जबर्दस्ती खींच लाकर उसे रथ पर चढ़ाया, तब कहा–"मैं युद्ध करके गायों को छुड़ा लेता हूं। तुम रथ हांको।"

रथ जब शमी वृक्ष के निकट आया तब अर्जुन ने उत्तर से कहा– "राजकुमार, हमारे पास जो आयुध हैं, वे किसी काम के नहीं हैं। पांडवों ने अपने आयुध इस वृक्ष पर छिपा रखे हैं। उनमें अर्जुन का गांडीव भी है। तुम उस शवाकृति में स्थित बण्डल को खोल दो तो तुम्हें सारे आयुध दिखाई देंगे।"

उत्तर ने वृक्ष पर चढ़कर सारे अस्त्रों को खोल दिया, उन्हें देख आश्चर्य चकित हो बोला–"जुएँ में धोखा खाकर पांडवों ने अपना राज्य खो दिया, बेचारे न मालूम वे इस समय कहाँ पर हैं? क्या क्या कष्ट झेल रहे हैं!" ये शब्द कहते उत्तर का चेहरा उदास हो गया।

"मैं ही अर्जुन हूं। तुम्हारे पिता के दरबार में रहनेवाले कंक युधिष्ठिर हैं। तुम्हारा रसोइया वल्लव ही भीम है, घोड़ों की देख-भाल करनेवाला व्यक्ति नकुल है, गायों का पालन करनेवाला सहदेव है। कीचकों की मृत्यु का कारण बनी सैरंध्री ही द्रौपदी है।" अर्जुन ने उत्तर को समझाया।

उत्तर ने पहले अर्जुन की बातों पर विश्वास नहीं किया, तब अर्जुन ने उसे समझाया कि उसके कितने नाम हैं और वे कैसे प्राप्त हुए हैं। इस पर वह अर्जुन के चरणों पर गिरकर बोला–"अर्जुन, यह मेरे लिए भाग्य की बात है कि आपका परिचय मुझे प्राप्त हुआ। मैंने अनजाने में कुछ बक दिया होगा, मुझे क्षमा कीजिये। अब मेरा डर जाता रहा, आप जिस ओर रथ ले जाने को कहेंगे, उस ओर ले जाऊँगा।"

इसके बाद अर्जुन ने उत्तर के द्वारा आयुधों को रथ पर रखवा दिया और

कहा–"देखो, अब मैं तुम्हारे शत्रुओं का कैसे नाश कर देता हूँ!" ये शब्द कहकर अर्जुन ने गांडीव अपने हाथ में लिया, हाथ के कंगण उतार दिया, केश बांधकर पूरब की ओर मुड़कर अस्त्रों का ध्यान किया। गांडीव पर प्रत्यंचा चढ़ाकर टंकार की, तब शंख बजाया, उस ध्वनि को सुनकर उत्तर डर गया। ऐसी ध्वनि उसने कभी न सुनी थी।

अर्जुन का रथ द्रोणाचार्य की ओर बढ़ते देख उसने दुर्योधन से कहा–"सामने आनेवाला व्यक्ति निश्चय ही अर्जुन है।"

इस पर दुर्योधन ने कहा–"अज्ञातवास का एक वर्ष पूरा होने के पहले ही अर्जुन प्रकट हो गया है। इसलिए पांडवों को पुन: बारह वर्ष का वनवास करना पड़ेगा। शायद वे यह नहीं जानते होंगे कि अज्ञातवास की अवधि पूरी नहीं हुई है। या हमारे हिसाब में गलती होगी। इसका सही हिसाब अकेले भीष्म पितामह ही लगा सकते हैं। कल शाम को त्रिगर्तों ने दक्षिण में गोग्रहण किया होगा। आज सुबह हम उत्तर में गायों को पकड़ने आये हैं। अर्जुन उन्हें छुड़ाने आ रहा है, शायद मत्स्यदेश की सेना इसके पीछे आ रही हो? हम अर्जुन के साथ युद्ध करेंगे।"

"अज्ञातवास की अवधि पूरी न होती तो अर्जुन प्रकट न होता, वह गायों को छुड़ाये बिना वापस न लौटेगा। इसलिए युद्ध अनिवार्य है।" द्रोणाचार्य ने कहा।

इसके बाद भीष्म ने दुर्योधन से कहा–"हर पांच साल में दो-दो अधिक मास पड़ते हैं। पांडवों ने वनवास तथा अज्ञातवास के रूप में जो तेरह वर्ष बिताये, उन वर्षों में पांच महीने, बारह दिन अधिक आये हैं, इस हिसाब से पांडवों के अज्ञातवास की अवधि समाप्त हो चुकी है। यह जानकर ही अर्जुन आज प्रकट हो रहा है। युद्ध में विजय और पराजय का निर्णय करना संभव नहीं है। इसलिए तुम्हीं

फ़ैसला करो कि न्याय के अनुसार तुम पांडवों को राज्य दोगे या युद्ध करोगे?"

"पांडवों को मैं बिलकुल राज्य न दूंगा। आप लोग युद्ध के लिए तैयार हो जाइये।" दुर्योधन ने स्पष्ट शब्दों में उत्तर दिया।

"तब तो तुम हमारी सेना का चौथा हिस्सा साथ लेकर हस्तिनापुर को लौट जाओ। एक और चौथा हिस्सा सेना गोगणों को साथ ले तुम्हारे पीछे आवेगी। बाक़ी आधी सेना के साथ मैं, द्रोण, कर्ण, अश्वत्थामा, कृप आदि अर्जुन का सामना करेंगे।" भीष्म ने कहा।

सबको यह सलाह पसंद आयी। दुर्योधन ने ऐसा करने की सम्मति दी। भीष्म ने सेना के लिए व्यूह की रचना करके यह निर्णय किया कि किस दिशा में किसको खड़ा होना है।

व्यूह में खड़ी कौरव सेना की ओर अर्जुन ने रथ बढ़ाया। अब अर्जुन साफ़ दिखाई दे रहा था। उसने उत्तर से कहा—"तुम रथ को इस तरह खड़ा करो जिस से बाण के प्रयोग का क्षेत्र आ सके। मैं देखूंगा कि दुष्ट दुर्योधन कहाँ पर है! बाक़ी सबको छोड़ मैं पहले उसे हरा दूंगा। इस के बाद समझ लो कि बाक़ी सब हार गये हैं।"

इसके बाद अर्जुन ने उत्तर को द्रोण, अश्वात्थामा, कृपाचार्य तथा कर्ण को दिखाया, लेकिन दुर्योधन दिखाई न दिया। तब अर्जुन बोला—"लगता है कि दुर्योधन जान बचा कर गायों को साथ ले दक्षिण मार्ग में हस्तिनापुर को भाग गया है। इसलिए हे उत्तर, तुम इस सेना को छोड़ रथ को दुर्योधन की ओर बढ़ा दो। उसका सामना करके गायों को लौटा लेंगे।"

अर्जुन जब सब योद्धाओं को छोड़ दुर्योधन की ओर बढ़ने लगा तब इसका रहस्य जानकर कृपाचार्य ने कहा—"अर्जुन दुर्योधन का सामना करने जा रहा है। अर्जुन के सामने दुर्योधन ठहर नहीं सकता। इसलिए चलिए, हम लोग दुर्योधन की मदद करेंगे।"

शिवपुराण

[१८]

प्राचीन काल में सालंकायन नामक मुनि रहा करता था, उसके शिलाद नामक एक पुत्र था। शिलाद के कोई संतान न थी, इसलिए कैलास में जाकर पार्वती-परमेश्वर के प्रति उसने घोर तपस्या की। पार्वती और परमेश्वर ने प्रत्यक्ष होकर शिलाद की इच्छा जान ली और अपना दुख प्रकट करते हुए कहा–"शिलाद, तुम्हें कोई संतान न होगी, फिर भी तुम्हें एक पुत्र प्राप्त होगा।"

शिलाद अपनी तपस्या समाप्त कर आश्रम को लौट आया, पर उसे बहुत समय तक कोई पुत्र प्राप्त न हुआ। इस पर उसने यज्ञ करने का निश्चय किया।

शिलाद जब यज्ञकुण्ड खोद रहा था, तब उसे एक सुंदर बालक दिखाई दिया। शिलाद ने उस बालक का नामकरण नंद किया और उसका पालन-पोषण करने लगा।

एक बार मित्र और वरुण नामक दो मुनि शिलाद के आश्रम में आये। नंद को देख मुनियों ने बताया कि यह बालक अल्प आयुवाला है। इस पर शिलाद दुखी रहने लगा।

नंद ने अपने पिता की चिंता का कारण जान लिया। उसने केदार में जाकर पार्वती और परमेश्वर के प्रति घोर तपस्या की। बहुत समय बाद पार्वती और परमेश्वर ने दर्शन देकर नंद से वर मांगने को कहा।

"भगवान, मैं दीर्घायु बनकर सदा आपकी सेवाएँ करते जगत में यश प्राप्त करूँ, यही वरदान मुझे दीजिये।" नंद ने वर माँगा।

अंतिम पृष्ठ का चित्र

पार्वती और परमेश्वर ने उसे वह वर देते हुए उसका नामकरण नंदीश्वर किया और उसे गणाधिपत्य भी प्रदान किया। शिवजी ने नंद का अभिषेक करने के लिए अपनी जटा-जूट से गंगाजल का प्रयोग किया। अभिषेक का वह जल पांच नदियाँ बनकर त्रिस्त्रोत, जटोदक, स्वर्णोदक, जंबू और बृषध्वज नाम से प्रवहित हुआ।

इसके बाद पार्वती और परमेश्वर नंदीश्वर को अपने साथ कैलास में ले गये। कालांतर में नंदीश्वर ने मरुत्त की पुत्री सुकीर्ति के साथ विवाह किया। इसके उपरांत नंदीश्वर के माता-पिता के वंशवाले सब शिवजी के आदेश पर रुद्रगणों में मिल गये।

सृष्टि के प्रारंभ काल में त्रिमूर्ति पैदा हुए। उस समय ब्रह्मा ने विष्णु तथा महेश्वर से कहा–"मैं ही परब्रह्म का स्वरूप हूं। तुम लोग मेरी सेवा करो।"

ये बातें सुनने पर ईश्वर ने रौद्र आकृति धारण करके हुंकार किया जिससे एक भयंकर आकृतिवाला व्यक्ति पैदा हुआ। उसके तीन आँखें थीं, उसका शरीर सफ़ेद था और वह त्रिशूल इत्यादि आयुध धारण किये हुए था। वह दिशाओं को गुंजाते हुए डमरू बजाते बोला–"हे परमेश्वर, आपने मेरी सृष्टि क्यों की?"

"तुम इस ब्रह्मा को दण्ड दो।" ईश्वर ने आदेश दिया। इस पर उस राक्षस आकृति ने ब्रह्मा के पांच सरों में से मध्य

मर को अपनी उंगली के नाखून से काट कर दूर फेंक दिया। ब्रह्मा का सर जहाँ गिरा था, वही प्रदेश ब्रह्म कपाल है। ब्रह्मा का मर जहाँ काटा गया था, वही काशी है।

ईश्वर ने जिस व्यक्ति की सृष्टि की उसका नाम कालभैरव रखा और अपना अंगरक्षक नियुक्त किया।

लेकिन ब्रह्महत्या का पाप भयंकर आकृति के साथ कालभैरव का पीछा करने लगा। इसे देख ईश्वर ने कहा–"हे कालभैरव, तुम ब्रह्महत्या के पाप से मुक्त होना चाहते हो तो तीर्थाटन करते हुए काशी जाओ, वहाँ पर तुम को इस पाप से मुक्ति मिलेगी।"

कालभैरव तीर्थाटन करते काशी जा पहुँचा। गंगा में स्नान कर पवित्र हो गया। इसके बाद काशी में ही रहकर काशी नगर के क्षेत्रपाल बनकर पूजा पाने लगा।

प्राचीन काल में व्याघ्रपाद नामक एक मुनि था, उसकी पत्नी का नाम विमला था। वे दोनों शिवभक्त थे। दोनों ने शिवजी की आराधना की तो उनके अनुग्रह से उन्हें एक पुत्र पैदा हुआ। उसका नामकरण उपमन्यु किया गया।

विमला के मायकेवाले विमला तथा उपमन्यु को अपने घर ले गये और कुछ समय बाद फिर व्याघ्रपाद के पास भेज दिया।

उपमन्यु जब पाँच वर्ष का हुआ, तब उसने एक दिन अपनी माँ से पूछा–"माँ, मुझे दूध चाहिये।"

"बेटा, हम दरिद्र हैं। तुम्हारे फूफे धनी हैं, इसीलिए वे तुम्हें दूध-दही खिलाया करते थे, हमें दूध तक नहीं है।" विमला ने अपने पुत्र से कहा।

इसके बाद विमला ने सत्तू में पानी मिला कर दिया तो उपमन्यु ने पीने से इनकार किया और रोने लगा।

"बेटा, मैंने तुम्हें समझाया कि हम दरिद्र हैं, फिर भी तुम रोते हो तो मैं क्या कर सकती हूँ?" माँ ने कहा।

"माँ, हमारी दरिद्रता को दूर करने का कोई उपाय है?" उपमन्यु ने पूछा।

विमला ने अपने पुत्र को व्याघ्रपाद के पास ले जाकर सारा वृत्तांत सुनाया।

व्याघ्रपाद ने उपमन्यु को शिव पंचाक्षरी मंत्र बता कर कहा–"बेटा, तुम कैलास पर्वत पर जाकर यह मंत्र जपो, पार्वती-परमेश्वर दर्शन देकर तुम्हें वर देंगे।"

उपमन्यु कैलास पर्वत पर जाकर शिव पंचाक्षरी का जप करते बैठ गया।

शिवजी ने विकृत रूप में उपमन्यु के पास आकर पूछा–"इस जंगल में तुम अकेले क्यों रहते हो? खूँख्वार जानवर तुम्हें सतायेंगे, इसलिए अपने घर लौट जाओ।"

"मैंने तुम्हारी सलाह नहीं माँगी, मैं जानता हूँ कि यह एक भयंकर जंगल है। पर मुझे कोई शक्ति विचलित नहीं कर सकती। मुझ पर पार्वती और परमेश्वर का अनुग्रह है।" ये शब्द कहकर उपमन्यु ने आँखें मूँद लीं।

उपमन्यु के साहस पर प्रसन्न हो पार्वती और परमेश्वर ने दर्शन देकर पूछा–"तुम कोई वर माँग लो।"

उपमन्यु ने पूछा–"भगवान, आप पार्थिव लिंग के रूप में रोज मेरी पूजाएँ प्राप्त कीजिये, साथ ही मुझे समस्त प्रकार के ऐश्वर्य प्रदान कीजिये।" पार्वती और परमेश्वर ने उसे ये दोनों वर दिये। उपमन्यु घर जाकर सुखपूर्वक अपने दिन बिताने लगा।

संसार के आश्चर्य:

१२८. हिमच्छेद नौका "लेनिन"

सोवियत देश की हिमच्छेद नौकाओं की प्रमुख नौका "लेनिन" अणुशक्ति की सहायता से चलती है। उत्तर ध्रुव की दीर्घरात्रि छे महिने की होती है। इस अवधि में यह नौका बर्फ़ के बीच मार्ग बनाते हुए आगे बढ़ती है, उसके पीछे माल लदी नौकाएँ ध्रुव प्रदेश के समुद्रों में घूमती हैं। उत्तर और दक्षिण ध्रुवों की अनुसंधान संस्थाओं के प्रतिनिधि इसमें होते हैं। इसमें कार्य करनेवाले नाविकों के लिए समस्त प्रकार की सुविधाएं होती हैं। वे लोग आराम के समय सिनेमा देख सकते संगीत सुन सकते है, कसरत कर सकते है, अथवा किताबे पढ़ सकते हैं। उन्हें अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों से रेडियो द्वारा बात करने की सुविधा भी उपलब्ध है।

Photo by Malats B. Bhansali
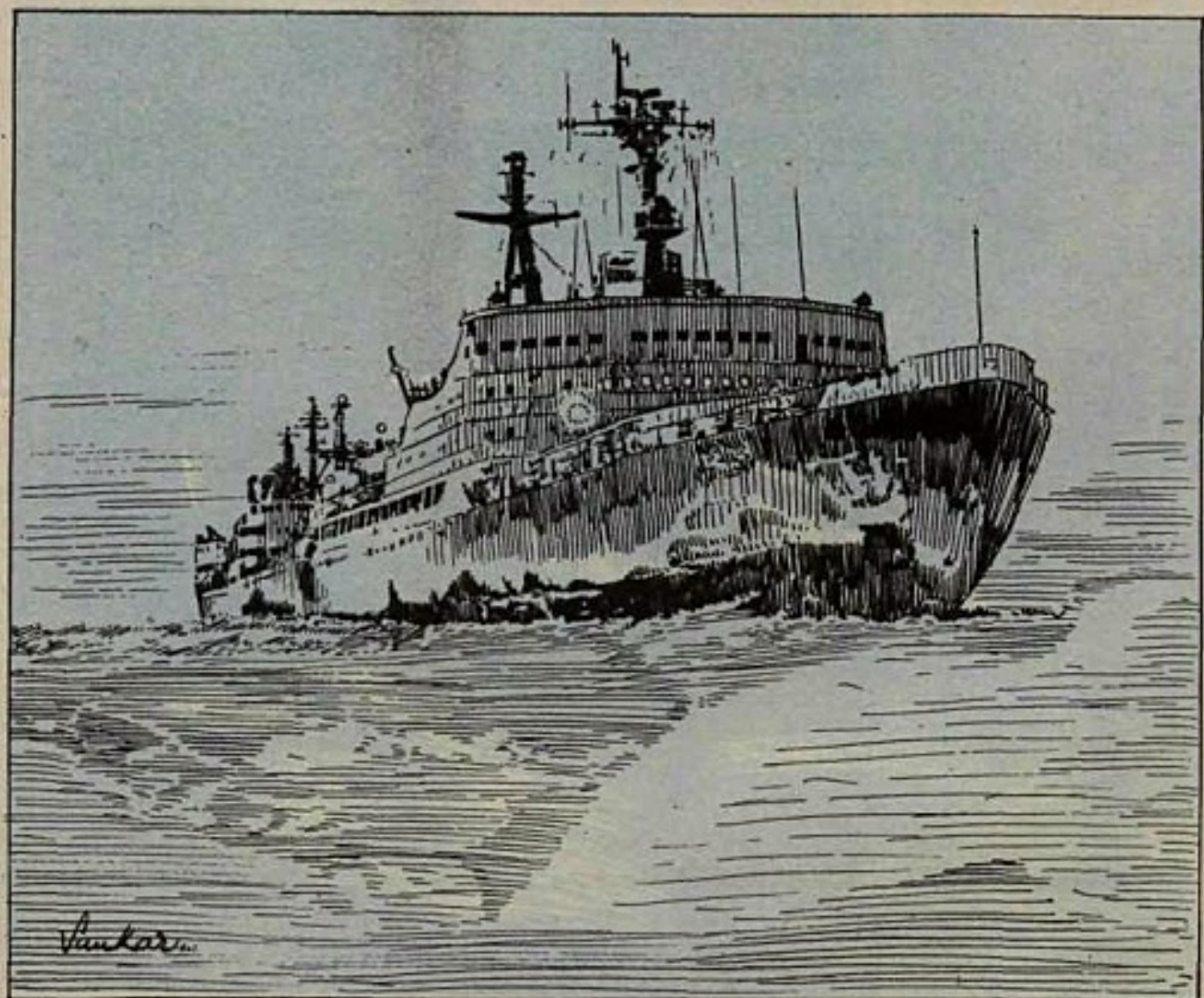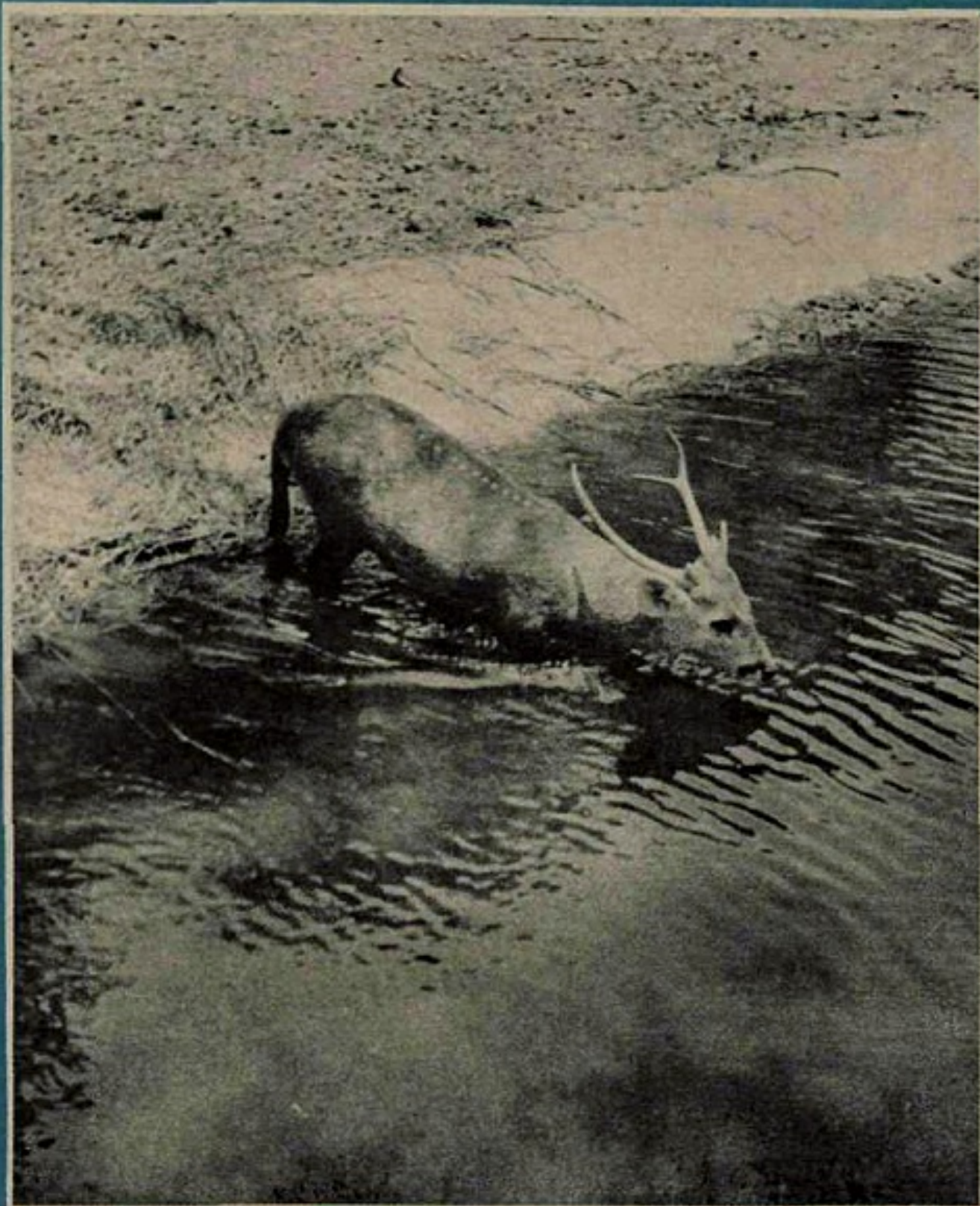
पुरस्कृत परिचयोक्ति

बच के रहना शिकारी से !

प्रेषक : आर. एन. श्रीवास्तव

Photo by Madan Gopal
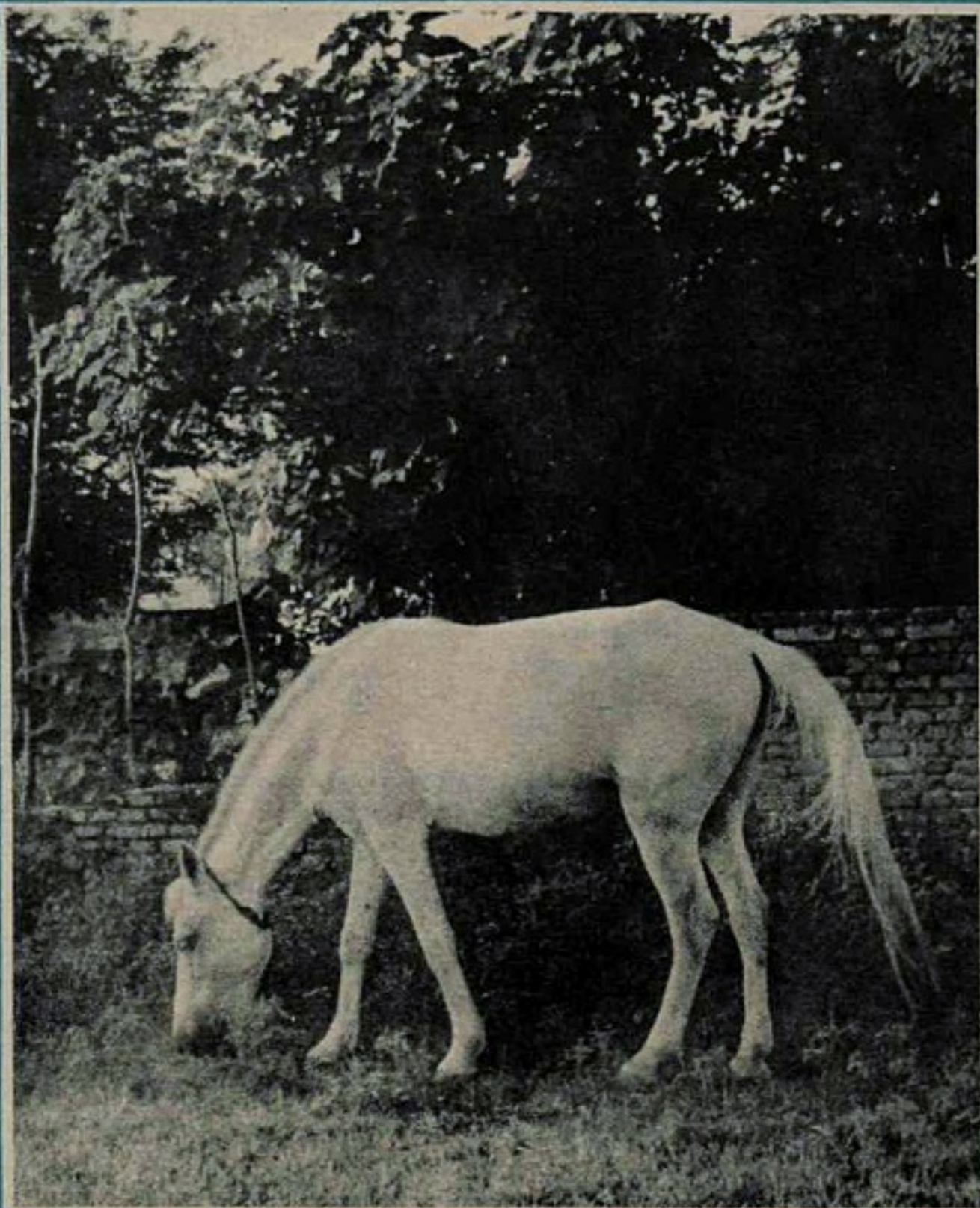
चादा गैरेज, कुदुदण्ड
बिलासपुर (एम.पी.)

मत डरना तू सवारी से !!

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २०)

★

★ परिचयोक्तियाँ सितंबर ५ तक प्राप्त होनी चाहिए।

★ परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबंधित हों, पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ नवम्बर के अंक में प्रकाशित की जायंगी !

चन्दामामा

इस अंक की कथा-कहानियाँ-हास्य-व्यंग्य

काली मिर्च ...	२	एक दिन का सुलतान ...	३१
पाँच रोटियाँ ...	५	आदत की बात ...	३९
यक्ष पर्वत ...	९	न्याय के वास्ते ...	४२
अपूर्व मैत्री ...	१७	गणपति भट्ट ...	४३
शंकालू आदमी ...	२३	महाभारत ...	४९
शक्ति की महिमा ...	२७	शिवपुराण ...	५७

दूसरा मुखपृष्ठ:
दुर्गा पूजा

तीसरा मुखपृष्ठ:
एक भक्त

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd. ...
Published by B. VISWANATH...

अब लीजिये, NP क्राकीज़!
इन नये, निराले, दिलकश स्वादों में ऑरेंज, मेंथाल, टूटी फ्रूटी
NP
ORANGE
CHEWING GUM
NP
TUTTI FRUTTI
Crackies
NP
MENTHOL
Crackies
CHEWING GUM
जी हाँ, बढ़िया से बढ़िया च्यूइंग गम सचमुच लाजवाब! मुँह ताजा रखनेवाला मनभाता स्वाद। आज खाइए, फिर हमेशा खाते रहेंगे।
दि नेशनल प्रॉडक्ट्स,
बेंगलोर-६

चन्दामामा के ग्राहकों को सूचना

यदि आप अपना पता बदल रहे हों, तो पाँचवीं तारीख से पहिले ही अपनी ग्राहक-संख्या के साथ, अपना नया पता सूचित कीजिये। यदि विलम्ब किया गया, तो अगले मास तक हम नये पते पर 'चन्दामामा' न भेज सकेंगे।

आपके सहयोग की आशा है।

डाल्टन एजन्सीस, मद्रास - २६

नहीं बेटे,
ऐसे नहीं चाहिए।
तुम्हें अपने दाँत
हर रात और सवेरे
ब्रश करने ही चाहिए।
इससे
दाँतों के बीच
सभी अन्न-कण
निकल जाएँगे, दाँतों में
सड़न नहीं होगी।
तुम्हें मसूढ़ों की भी
मालिश करनी चाहिए
ताकि वे
स्वस्थ और मज़बूत
रहें।

फोरहॅन्स

दाँतों के एक डाक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट।

49F-203R-HIN